लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

अप्रेल-जून, 2021

बरस : 44 अंक : 3 पूर्णांक : 151

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com
ravipurohit4u@gmail.com

आवरण
आरती शर्मा

रेखाचित्राम
शैलेन्द्र सरस्वती

ग्राहक शुल्क
पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 1500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

जंग ओ जीत्यां सरसी रे... *श्याम महर्षि* 3

कहाणी

पळगोड *डॉ. मनमोहनसिंह यादव* 4

केसर रा छांटा *शकुंतला पालीवाल* 10

आलेख

प्रगतिशील सुर रा सुरीला गीतकार गजानन वर्मा *श्याम महर्षि* 17

कविता

ग़ालिब / बरहमी छै *जितेन्द्र निर्मोही* 28

बिरमा री पूतळी / वोटां री उगाही *भंवरलाल सुथार* 29

राजियो भांभी / कोटै रो पटवारी / क्रांति *सतीश सम्यक* 31

प्रणधारी पाबू *महेंद्रसिंह सिसोदिया 'छायण'* 33

दूध-दही नैं चाय चाटगी *गौरीशंकर 'भावुक'* 36

बालपणै री बातां *बिमल काका गोलछा 'हंसमुख'* 38

गीत

भाया, गूढ ग्यान मत दीजै! / बता बीनणी के बोले! *मानसिंह शेखावत 'मऊ'* 40

दूहा

कोरोना ठिठकारिया *मोहनसिंह रतनू* 42

सायब थांरी याद में... *निर्मला राठौड़* 43

गजल

तीन गजलां *वीरेन्द्र लखावत* 45

लघुकथा

अरज / पीड़ / प्रेम *छगनलाल व्यास* 47

इचरज री बात / म्हाराज री उदासी *व्यास योगेश 'राजस्थानी'* 50

व्यंग्य

फेक जुग *संजय पुरोहित* 52

मुखिया मुख सो हो लिए *सत्यदीप* 54

हिंदी व्यंग्य

गुरु चरणां मांय तीजो *(प्रेम जनमेजय)* *उल्थो : कृष्णकुमार 'आशु'* 57

कूंत

जीयाजूण री ओळखाण करावती 'प्रेम री पोटळी' *डॉ. रमेश 'मयंक'* 62

जंग ओ जीत्यां सरसी रे...

कोरोना री दूसरी लैर साच्याणी खतरनाक है। लारलै साल ई कोरोना रो हमलो तो खतरनाक ई हो, पण इत्तो मानखो नीं मरियो। पण अबकाळै तो सोशल मीडिया अर फेसबुक माथै फगत कोरोना सूं अकाळ मिरतु अर सरधांजळियां रो तांतो-सो लागग्यो। लोग लारलै कोरोना काळ सूं सावचेती ई घणी बरती पण ओ दूसरो स्ट्रेन तो घाव में घोबो साबित हुयो।

लारलै बरस कोरोना काळ मांय आपां देख्यो हो कै 'वर्क फ्रॉम होम' री तरज माथै मोकळा साहित्यकार इण दौरान पूरी तरै सिरजणरत रैया अर राजस्थानी में ई मोकळी पोथ्यां पाठकां रै हाथां पूगी। केई पोथ्यां कोरोना संक्रमण रै विसय नैं लेय'र ई छपी तो डायरी विधा में ई केई साहित्यकार कोरोना काळ नैं आपरी पूरी मनगत सूं उकेरयो। पण अबकाळै तो सिरजण रो सोपो सो ई पड़ग्यो। राजस्थानी रा ऊरमावान रचनाकार डॉ. गजादान चारण 'शक्तिसुत' तो सिरजण पर मंड्या संकट रा आं बादळां नैं छितरावण सारू आपरी मनगत फेसबुक माथै प्रगट करी। बै लिख्यो, ''आं दिनां मैसूस कर रैयो हूं कै मिनख री मनगत ठीक नीं हुवै जणै कीं करण रो मन नीं करै। कोरोना काळ में साव बैला बैठ्या हां, पण ना तो कोई साहित्य सिरजण हुय रैयो है अर ना किणी बीजै काम में ई मन लागै। च्यारूंमेर हतआसा ई हतआसा है, हे सांवरिया! अबै रहम कर...''

आ मनगत कोरोना रै इण दूसरै कहर में म्हारै सागै हरेक साहित्यकार री रैयी हुवैला। कोरोना संक्रमण रै दौरान साहित्य जगत केई ख्यातनांव साहित्यकारां नैं खोय दिया। आ नीं पूरण जोग क्षति है। कोरोना संकट रै चालतां सरकारी साहित्य अकादमियां रा कामकाज ई ठप-सा रैया। फेरूं ई केई साहित्यकार अर सोशल मीडिया सूं जुड़्योड़ा लोग वर्चुअल साहित्यिक संगोष्ठियां रै सीगै साहित्य, संस्कृति अर कला सारू आपरा विचार प्रगट करता रैया है। कोरोना री दूजी लैर अबै खातमै कानी है। सिरजण री मनगत फेरूं बणण लागी है। बडेरा साहित्यकार हूंस भी बधा रैया है, जियां कै डॉ. 'शक्तिसुत' कीं दिनां पछै ई फेसबुक री आपरी दूजी पोस्ट माथै हतआसा री उण मनगत सूं उबरता थकां नूंवो अर जोस जगावतो गीत 'जंग ओ जीत्यां सरसी रे' लिख'र आपरै समकालीन सिरजणकारां में नूंवो उछाव-उमाव भर दियो है। सिरजण री इणी हूंस अर हुंकार री आस अर उडीक है।

—श्याम महर्षि

ISSN : 2320-0995

डॉ. मनमोहनसिंह यादव

पळगोड

सिंझ्या रो सुहावणो बगत। मधरो बायरो बाजै हो। सूरज ओलै-छानै बिसूंजण री त्यारी में हो। आभै में छीदा-माड़ा कसवाड़ छितरयोड़ा हा। पंखेरू आपरै आळां कानी ब्हीर होवता किलोळ करै हा। किलोळ इतरी मीठी कै सीधी हिवड़ै मांय हूक जगावती। ऊंडी निजर सूं देख्यो जावै तो धरती रा जीव-जिनावर, कीड़ा-मकोड़ा, रूंख-रोहीड़ा, सब सुस्तावण अर लूंठी बिसांई लेवण री उंतावळ में हा।

मनजी राज रा नौकर, पण गांव-रुखाळा लूंठा अफसर हा। सरकारी कोठी सूं बारै निकळ्या टणाटण होयोड़ा। पण हा असमंजस में कै किण ठौड़ पासी टुरै? आंख्यां रा कोइया इन्नै-बिन्नै फेरया, पण सीध नीं बैठी। अचाणचक कनलै घर रो बारणो खुल्यो अर दो जणा बारै निकळ्या। बारै आवतां ही चेतनराम अर रामलाल, दोनूं घणा लुळता थकां सा'ब नै मुजरो करयो।

चेतनराम भणाई महकमै रो रोकड़ियो हो। अणूतो कंजूस। फोकट रो मिलै तो डाम ई लगा लेवै। पण खूंजै सूं पेट सारू आटो ई नीं बपरावै। जद मोफत रो धान नीं मिलै तो आखी रात तारा गिणै। टाबरां रै खातर पोषाहार री कणक सारू मास्टरां रै लारै डोलतो फिरै, जाणै हिरावड़ो डांगरो फिरै। डील रो सैतान। साथळां अर पींड्यां दोनूं मोकळी मोटी। माथो जाणै भूण है। ...रामलाल जंगळात महकमै रो बेलदार। अेक नंबर रो दारूड़ियो। अणूतै काळूठै रंग रो मिनख। मन भी बित्तो ई काळो। हाथ रो पोलो हो। खूंजै मांय पईसा आवतां ई दारू अर सिणगार पेटै उडाय देंवतो। सिणगार रो इत्तो रसियो कै बीं रै साम्हीं बालीवुड री अैक्टरणी

ठिकाणो :
गांव उदयरामसर
(बीकानेर) राज.
मो. 9460021851

ISSN : 2320-0995

लूखी लागै। कांधै पर लटकायोड़ो अेक थैलो, ऊजळो अर फूठरो, जिण मांय काच-कांगसियो, क्रीम-पाउडर, रुमाल अर देसी दारू री अेक सीसी। ठुंगार सारू सागै बीकानेरी चबीणी रो अेक ठूंगो।

ओळख्योड़ा अर परख्योड़ा दोनूं मिनख सा'ब रै कनै आय'र ऊभग्या। ईंनली-बींनली बातां पोळाय दी। बगती बातां रै बिचाळै ई खेमाराम ग्रामसेवक चोर दांई छानै-सी आय'र बातां मांय भेळो हुयग्यो। घणो लुळ'र सा'ब नैं मुजरो कर्‌यो। खेमाराम नैं देखतां ई सा'ब बोल्या, ''कांई प्रोग्राम है, खेमाराम?''

रामलाल रै घर कानी सेन करतो खेमाराम कैयो, ''हुकम, अठै ईज रातबासो है।''

साब पूछ्यो, ''आज कीं रै बटीड़ लागसी?''

खेमाराम कीं बोलतो, उण सूं पैलां ई रामलाल आपरै कुड़तियै रै ऊपरलै खूंजै मांय सूं पांच रुपियां रो मुड़्योड़ो नोट काढ'र बोल्यो, ''हुकम, आज खेमाराम म्हारो मैमान है। बटीड़ म्हारै ईज लागसी।''

सा'ब इचरज में पड़ग्या। औ पांच रुपियां रो नोट अर तीन जणा! इण सूं ई साग-सब्जी, दारू, सगळा? आ आखी रात कींकर निकळसी? इयां सोचता थकां सा'ब खेमाराम रै सागै-सागै बजार कानी जावण रो बिचारै हा। रामलाल अर चेतनराम आपरै क्वार्टर पासी पाछा मुड़ग्या, इण थ्यावस रै सागै कै लागै है आज बटीड़ सा'ब रै ईज लागसी। आपां रो जुगाड़ आपां नैं ईज करणो पड़सी। होळै-होळै पांवडा भरता सा'ब अर खेमाराम बजार कानी टुरया हा। अचाणचक लारै जोर सूं पूंपाड़ी बाजी। पूंपाड़ी री आवाज सूं दोनूं जणा थम'र लारै झांक्यो। अेक फौजी मोटर नेड़ै आय'र थमगी।

''कुण हुसी?''

''सा'ब, ठाह कोनी। फौज्यां री मोटर दीसै है।''

दोनूं रो अचरज अर दोघड़चिंता मिटै, इण सूं पैलां ई अेक फौजी गाडी सूं नीचै उतर'र फटाक करतो सा'ब सूं हाथ मिलायो, ''हाऊ डू-यू-डू?''

घणै अचंभै सूं हरखता सा'ब बोल्या, ''वैल मेजर सा'ब! इण बगत कींकर पधारणो हुयो?''

मेजर सा'ब बोल्या, ''आप सूं मिलण नै।''

मेजर रावल सा'ब रा नूंवा-नूंवा भायला हा। दुसमी देस रै सागै भिड़ंत री त्यारी सारू फील्ड-ड्यूटी माथै आयोड़ा हा। आखै समिति-परगनै माय फौजां रा दळ इण तरयां बिखरयोड़ा हा जाणै टिड्डी-दळ आयग्यो हुवै। फौजी मोटर। कनै ऊभै दोनूं अफसरां री बातां चालै ही अर मुळकै हा। कित्ती'क ताळ ठैरसी—इण बात री चिंता खेमाराम नै खायां खड़ी ही। दोनूं फिरंगी बोली में बंतळ करता हा। खेमाराम गूंगै ज्यूं दोनुवां री घांटी रै

लटकां सूं कीं मतलब काढण नै खसतो हो, पण पार को पड़ी नीं। अेक डर, अेक संको इण बात रो हो कै कठैई रोटी रै जुगाड़ सूं हाथ नीं धोवणो पड़ जावै। मोटै मिनखां रै सागै घणकरी बार बेगार ई पांती आवै। अेक लूंठी खळबळी अर झमेलै मांय फंस्योड़ो खेमाराम इण तरयां ऊभो हो जाणै दो सांडां रै बिचाळै मरतल टोगड़ियो। अचाणचक झमेलो कीं सलट्यो। सा'ब रै कांधै पर हाथ धरता मेजर सा'ब मातभासा में बोल्या, ''सा'ब, आज आपनै म्हारै सागै चालणो पड़सी। म्हारै तंबू में आपरी अणूती उडीक हुवण लाग रैयी है।

''म्हारी उडीक, कियां?''

''ब्रिगेडियर सा'ब आप सूं मिलणो चावै।''

अचरज सूं भरीजतां सा'ब कैयो, ''थांरा सा'ब म्हारै खातर तो अणसैंधा है। म्हारी तो पैलां सूं कोई जाण-पिछाण कोनी।''

मेजर सा'ब मुळक्या, ''मोटै मिनखां नै ओळखाण री जरूरत नीं हुवै। बूच्योड़ो मतीरो जद बारै निकळ जावै तो फेर उणनैं कुण छोडै! थे धरम-करम अर आतमा री बातां रा पारखू हो।''

थ्यावस री लांबी सांस लेंवता मेजर सा'ब थोड़ा थम'र आगै फेर कैवण लागा, ''म्हारा सा'ब ई आतमा-परमातमा री बातां में घणी ऊंडी जाणकारी राखै। सागीड़ा रंगीज्योड़ा है। दोनूं री सतसंगत सूं सोनै भेळो सुहागो रळ जासी।''

मेजर सा'ब री चीकणी-चोपड़ी बातां सा'ब रै हिवड़े में बैठगी। फटाक मोटर मांय बैठग्या। कनै ई खड़्यै खेमाराम कानी देख'र बोल्या, ''डोफा! अठै कांई करसी? मोटर मांय लारै बैठज्या।''

फौजी-मोटर होळै-होळै टुरण लागी। ड्राईवर बण्योड़ा हा मेजर सा'ब। पसवाड़ै बैठ्या सा'ब अर लारै बैठग्यो खेमाराम। मोटर में तीन जणा ई बैठ्या हा। कठैई सुगन माड़ा नी हुय जावै, इण सूं डरतो खेमाराम आपरी कुळदेवी नैं सिंवरै हो। अबै मोटर री चाल खाथी होवण लागगी। मोटर री बदळीज्योड़ी चाल रै सागै दोनूं अफसरां री बंतळ री बोली ई बदळीजगी। अबै बै पाछा फिरंगी बोली में बात करण लागग्या। लारै बैठ्यो खेमाराम इण टेम कीं चंचळाई में हो। दोनूं अफसरां री बातां में सेन सूं हंकारो देवण रै मिस आपरो माथो इयां हिलावै हो जाणै बोदी खेजड़ी री खोगाळ मांय बैठ्यो किरड़ो हिलावै। थोड़ा आगै पूग्या तो मारग में सांतरी गोळाई ही। मोटर नै मोड़ी तो जोर सूं हिलोळो लाग्यो। हिलोळै सूं लारै बैठ्यो खेमाराम आगीनै सिरक'र मेजर सा'ब री सीट सूं भिड़ग्यो। भारी डील रो मिनख हो खेमाराम। पाछो सावळ होवतां बगत लाग्यो। मेजर सा'ब पूछ लियो, ''लारै बैठा है जिका कुण है?''

सा'ब बोल्या, ''राज रो अफसर है। सूधो अर स्याणो मिनख है। रैण-सैण सूं अर भेख सूं साधू है, पण गळती सूं राज रै महकमै में सीर घलग्यो। नीं तो कठैई साधू ई

 ISSN : 2320-0995

होवतो।'' कैय'र सा'ब थोड़ा मुळक्या अर साव कूड़ी अर हत्ती-तत्ती बात नैं परोटण री जुगत बैठाई। आपरी बात नैं पूरी करता आगै बोल्या, ''परमहंस है। दावै जिसो खा लेवै अर पहर लेवै। कमती बोलै, मून रैवणो आछो लागै।''

...सा'ब री बातां मेजर सा'ब रै हाडोहाड बैठगी। खेमाराम रो भेख भूंडो अर मूंढो मोटो हो। बळद सरीखी मोटी आंख्यां, पण मूंछां बांकड़ली ही। पतलून ऊंची अर कुड़तियो काठो। ऊपरलो बटण टूट्योड़ो। कुड़तै री कालर आधी सांवटीज्योड़ी। माथै रा केस इण तरां बिखर्‌योड़ा हा जाणै कोई फूड़ रांड रा हुवै। सैंवती चाल सूं भागती मोटर मनचींती ठौड़ कनै पूगण लागी। मोटर रै ब्रेक लगाया।

मोटर रै थमतां ई पसवाड़ै ऊभौ रंगरूट इण तर्‌यां भाग्यो जाणै लाय लागी है। फटाक सूं मोटर कनै आय'र अेक हाथ सूं बारणो खोल्यो। अफसरां रै उतरतां ई पगां नैं घणै रौब सूं जमीन माथै पटक्या। अेक हाथ सूं बंदूक झाल्योड़ी ही अर दूजै हाथ नैं ऊपर खींच'र सैल्यूट मारी। रंगरूट रै भेख सागै कांधै अर मोरां माथै बंदूक रो कुतको घणो फाबै हो। अेक रंग-बिरंगो नजारो पूरै खोड़ रो सिणगार करै हो। धनभाग इण मगरै रै खोड़ रा जिको आज बीकानेरी छैलै सूं कमती नीं दीसतो हो। सिणगार्‌योड़ै खोड़ में अफसरां रा तंबू इत्ता फूठरा सजायोड़ा हा कै बांरै साम्हीं नूंवी बींदणी पाणी भरै। चोखो फर्नीचर, सोफा, कूलर, मौज-मस्ती रो सगळो जुगाड़। सुरग रो-सो लखाव हुवै।

तंबू मांय बड़तां ई खेमाराम डफळीजग्यो। मन में विचारै हो कै औ कोई तंबू है या कोर्‌योड़ो अर रंग्योड़ो रात रो सुपनो! ...सा'ब घणा सावचेत हा। थोड़ै अणमणै मन सूं विचारै हा कै औ अफसरां रो मैस है, जठै फगत अफसर ई बड़-निकळ सकै अर आपणै सागै औ मोटै माथै रो मिनख! कठै ई भांडो नीं फूट जावै, मुरदार मिनख है। काळजै में उकड़-धुकड़ माच्योड़ी। छोटो करमचारी, अंगरेजी री टांग-पूंछ नीं जाणै अर म्हैं मेजर रै साम्हीं इणनैं अफसर गिणा दियो। मन में जोगमाया नै सिंवरी—हे जोगमाया! आज म्हारी अक्कल निसरगी। इण कूड़ नैं तूं ईज परोटजै! अमूझ्योड़ा सा'ब कीं आगै टुरता, उण सूं पैलां ई मेजर सा'ब कैयो, ''सा'ब सोफै माथै बिराजो।''

सा'ब नैं बैठ्या देख'र खेमाराम कींकर ऊभो रैवतो! मौको लागतां ई खट कूलर रै अेन साम्हीं जाय जम्यो। ठंडी पून रा फटकारा लागतां ई डील खिलग्यो। जीव घणो सौरो हुयो। पण आखै तंबू मांय गंध पसरगी। गंध फैलतां ई मेजर सा'ब रो माथो चकरायो। आ गंध अचाणचक कियां? जवानां नै डांट मारी, ''यह बदबू कहां से आ रही है?''

मेजर सा'ब ऊभा होयग्या। जवान आकळ-बाकळ हुयोड़ा गंध री सोझी सारू तंबू में इन्नै-बिन्नै सूंगा काढण लाग्या जाणै जोगियां रा कुतिया लूंकड़ी री घुरी कनै काढै। गंध रो कीं ठाह-ठिकाणो नीं लाध्यो। ठाह करता फौजी मन में विचारै कै स्यात कोई भटकोळ

ऊंदरो आय'र कूलर मांय मरग्यो। सा'ब ऊंडी निजरां सूं इण आपरेसन नैं निरखै हा। मन में कैवण लाग्या कै ऊंदरो तो को मरयो नीं, पण मोटोड़ो मिनख खेमलो मरग्यो। थोड़ा मुळक'र मन में विचारयो कै फौजी तो फौजी ही हुवै। आंनै कूलर रै साम्हीं बैठ्योड़ो ऊंदरो नीं दीखै। वाह रे फौजी भायां! थांरै भरोसै औ देस कींकर चालसी?

बै झट ऊभा हुया। थोड़ा आगै जाय'र खेमाराम नैं आसण सूं हटायो। सेन सूं दूजी ठौड़ बैठायो। तंबू पाछो चांकैसर हुयग्यो। गंध खूटगी। ...रातड़ली होळै-होळै आपरो असर दरसावण लागी। मादक अर मतवाळी रात। दारू अर जीमण परोसण री उतावळ में बैठ्या अफसर। अेक उडीक, अेक बाट जोवै हा। पण सुवाद चाखण री बेळा घणी अळगी नीं ही। नैड़ी ही। सगळा अफसर ऊभा होयग्या। तंबू में धोळा अर ऊजळा गाभा पैरयोड़ो, फूठरो-गोरो मिनख आयो।

''प्लीज, सिट-डाउन। मेजर रावत कैयो, ''सर! बीडीओ सा'ब।''

''वेल्कम।''

''थैंक्यू सर!''

गोळ पाटै रै च्यारूंमेर हथाई मांय बैठ्या अफसरां रै दारू रा प्याला खड़कण लाग्या। अळगै बैठे खेमाराम री जीभ लपरका इण तरयां लेवै ही जाणै भूखी सांपणी ऊंदरै कानी देख'र लेवै। अेक दूजो पाटो उणरै सारू आयो, उण रै डील सारू घोड़ा रम री लांबी बोतल आई अर भांत-भांत री ठुंगार ही। खेमाराम, रीझ'र हियै में विचारयो—थारी जय हो जोगमाया! हाथी नैं मण अर कीड़ी नैं कण थारै सिवाय कुण देय सकै!

रवींद्रनाथ टैगोर कैयो है, अेकला चालो रे! और कोई चालै-नीं-चालै, पण औ बंदो खेमाराम तो अेकलो ई आखी बोतल नैं खींचसी। आखो तंबू दो भागां में बंट्योड़ो। अेक भाग खेमाराम रो, जिण मांय नीं हथाई ही अर ना कोई बंतळ। चुपचाप खावण-पीवण रो काम चालतो हो। दूजो भाग अफसरां रो, जिण मांय जीमणो कम अर बातां घणी। बातां दरसणसास्त्र री चालै ही। सिस्टी-विज्ञान अर आतमा-परमातमा पर ऊंडी अर लांबी हथाई छिड़गी। नचिकेता अर अस्टावक्र रै माईतां सागै घट्योड़ी तात्त्विक बातां री भिड़त सूं जीव-सौरो हुयग्यो। मिनख रै मरण सारू छेकड़लै सांसां रै बखाण पर घणी फूठरी बातां चालै ही, इत्तै में सा'ब री निजर खेमाराम पर पड़ी। आकळ-बाकळ हुयोड़ो। आंख्यां गैळीज्योड़ी। पूरी बोतल नैं इण तरां गटकायग्यो जाणै पैणो सांप मिनख री सांसां पीवै। दारू रो नसो। आंख्यां इण तरां हुयगी जाणै तेल पीयोड़ो मिन्नो हुवै। कीं अणूती नीं हुय जावै, इण सारू सा'ब फटाक-सी ऊभा हुया अर पेसाब रो ओळावो लियो। पेसाबघर रै मांय बड़'र खट करता पाछा निकळ्या। खेमाराम रै कनै पूग्या। कान में बोल्या, ''थनैं थारै बाप री सौगन है, बम पड़ जावै तो ई बोलजे मती। नीं तो भांडो फूट जावैलो।''

 ISSN : 2320-0995

दबादब जीमण परोसीजण लागो। हळकी-फुळकी बातां सागै हळको जीमै हा, अफसर लोग। पसवाड़ै दूजै पाटै माथै बैठ्यै खेमाराम री भूख भड़कगी। गंगामाई रै पंडै दांई लाव-लाव करै हो। मोटै थाळकियै मांय भांत-भांत रो मांस परोस्यो। पांच मिन्टां मांय ई सगळो सुड़कग्यो। पुरसणियो थाकग्यो, पण बंदे रै पेट रा बळ ओजूं तांई नीं निकळ्या। खेमाराम री डांवाडोल हालत देखी तो सा'ब फटाक सूं थाळी मांय हाथ धो लिया। ब्रिगेडियर सा'ब कानी कातर निजरां सूं देखता बोल्या, ''सा'ब अबै म्हांनै आप छुट्टी दिरावो। तड़कै कलेक्टर सा'ब आवणवाळा है। त्यारी करणी पड़सी। मोड़ो हुयां कोई अळबत गळै पड़ जासी।''

''वैल!'' कैवता ब्रिगेडियर सा'ब ऊभा हुयग्या। मेजर रावत ड्राईवर बण'र फटाक मोटर लाया। खेमाराम नैं झाल'र मोटर में लारै बैठायो। मोटर ब्हीर हुई। लारै बैठ्यो खेमाराम पूरो कुंभकरण बण्योड़ो हो। कद भांडो फोड़ दे, कीं ठाह कोनी हो। खैर, जियां-तियां घर तांई राजी-खुसी पाछा पूगग्या। रस्तै में सा'ब सगळा देवी-देवतावां नैं सिंवरता रैया। जोगमाया लाज राखली।

मोटर थमगी। मोटर रै लारलै दरवाजै सूं मेजर सा'ब अर सा'ब दोनूं मिल'र खेमाराम नैं इण तरयां हेठै उतारयो जाणै अलाड़ै चौपगै नैं उतारै। मेजर सा'ब जद ब्हीर हुया तो सा'ब रै सांसां म्हें सांस आयो।

पछै मनोमन विचारयो—आईंदा इण पळगोड नैं साथै लावूं तो तीन ई तलाक।''

◆◆

शकुंतला पालीवाल

केसर रा छांटा

हरया-भरया गेला मांय महुड़ा रा घेर-घुमेर रूंखड़ा अर नान्ही-नान्ही डूंगरियां माथै गारा-माटी सूं बण्या झूंपड़ा अर उणमें रैवता सीधा-सरल मिनख। इण नान्हा-सा गांव रो नांव कागदर। कागदर गांव रा छोटा-सा फळा मांय आज परभात दिनूगै सूं ई घणी चैळ-पैळ व्है रैयी ही। नान्ही-नान्ही डूंगरियां माथै बण्या आपरा घरां सूं मिनख बारणै आवा लाग्या अर अेक ठौड़ भेळा व्हैण लाग्या ।

ढोल वाळो हाको पाड़तो उण सूं पैलां ईज सगळा मिनख भेळा व्हैयग्या अर होवै ई क्यूं नीं? केसर छांटा री रसम पूरी करणी ही। इण रसम में आज दिना तांई कागदर गांव रा सगळा बूढा-ठाडा मोतबीर मिनख घणा हरखमान सूं भेळा व्हैवता आया। आदिवासी खेतर री इण रसम नैं किणी जमाना मांय उण रा बाप-दादा रांखड वंचावण खातर सरू कीधी ही। वठा सूं आ रसम हाल तांई वगर नागा चाल री ही। हर साल आ रसम वगर किणी मुसीबत समपरण व्है रैयी ही। इण गांव रा भडै भगवान रिखबदेव जी रो घणो जूनो मिंदर बण्यो थको हो अर उणी रा नांव सूं कसबा रो नांव रिखबदेव पड़्यो। भगवान रिखबदेव जैन धरम रा पैला तीर्थंकर हा। ईं वजै सूं उण कस्बा मांय बस्या जैन धरम रा मिनखां मांय रिखबदेव भगवान में सरधा उपजणी कांई नूंवी बात नीं ही, पण उण कस्बा अर उण रा मेरले-कोरले नान्हा, मोटा फळां अर गांवां मांयनै रैवा वाळां आदिवासी समाज रा मिनखां मांयनै भी भगवान रिखभदेव रै पेटै सरधा किणी तरयां सूं कम कोनी ही। मिंदर मांय ऊभी भगवान री मूरत काळा भाटा सूं बणी होवा री

ठिकाणो :
448, शास्त्री सर्किल,
उदयपुर (राजस्थान)
313001
मो. 7877354547

 ISSN : 2320-0995

वजै सूं आदिवासी मिनख उणनैं काळा बावसी कैवा लाग्या अर उणरी पूजा-अरचना में कई कमी कोनी राखता। रांखड मांय रैवा वाळा आदिवासी मिनखां मांयनै किणी तरयां रो कोई दिखावो कोनी हो। सगळा सीधा-सरल माणस। पूजा-अरचना रा घणा कांई तरीका नीं जाणता, पण औ जरूर हो कै अगर उण रा घरां मांयनै रींगणा रा गोढ पै अेक रींगणो भी आवतो, तो सगळा पैली वै दौड़्या थका काळा बावसी रै धोक देंवता अर उणरै वो रींगणो अरपित करता। पैली साग-भाजी व्हो, पैलो फळ व्हो या पछै पैली फसल पाकी व्हो, सगळा सूं पैली काळा बावसी रै अरपित कियां पाछै आपरै घरां मांयनै वापरता। उण मिनखां री चामड़ी रो रंग भलांई काळो हो, पण उणां रो मन उजळो अर पाणी ज्यूं काच सरीखो साफ। इण धरा अर परकत नैं आपणी मां मानता। नान्ही-नान्ही डूंगरियां माथै गारा-माटी सूं लीप'र घर बणाता अर उणमें रैवास करता। इणां रा पुरखां रै वास्तै भलांई काळो आखर भैंस बराबर हो, पण इण धरा-परकत, जंगळ अर रूंख नै बचावण वास्तै घणा चोखा तरीका अपणाया अर उण तरीका नैं रसम रो रूप देय दीधो। अनुसासण अस्यो कै कतरा बरसा सूं आ जंगळ बचावण री रसम वगर किणी नागा चाल री है। मिनख किणी सूं डरपै तो वो है—धरम, भगवान अर ऊं समै पुरखा ईं वास्तै सगळी रसम अर परंपरावा नैं सीधी भगवान सूं जोड़ दीधी, जिण वजै सूं सगळा उण परंपरावा रो सम्मान करै अर वगर किणी ना-नूकर रै रसम निभावै। जद पुरखां देख्यो कै काळा बावसी रै रोज केसर चढै अर उण सूं उतरी केसर नैं सुखायां पाछै परसाद री तरयां मिनखां मांय बांटै। केसर चढवा सूं काळा बावसी रो अेक नांव केसरियाजी भी हो। इण तरयां पुरखा जंगळ अर रूंख बचावण सारू केसरियाजी री चढी केसर नैं गांव रा सगळा बूढा-बडेरा, मोतबीर मिनख अेक ठौड़ भेळा व्हैवता अर किणी मोटा ठामड़ा मांयनै पाणी लेय'र उण मांयनै केसर घोळता, इण रा पाछै पाणी मांय घुळी केसर रो ठामड़ो हाथां मांयनै लेय'र सगळा मिनख जंगळ मांय साथै-साथै चालता अर जूना घेर-घुमेर रूंखड़ां माथै उण केसर रो छांटो नाखता अर जीं रूंखड़ा पै अेक दाण केसर रो छांटो लाग जावतो वो रूंख हमेस रा वास्तै काटण सूं बच जावतो। इण तरीकां सूं उण खेतर रै मांय जगंळ अर रूंखड़ा आज भी है। केसर रा छांटां साथै सगळा मिनख काळा बावसी री सौगंध खावता कै वै इण रूंखड़ा नै अबै कदैई कोनी काटैला। अर ईं तरयां रसम पूरी व्हैती अर सगळा मिनख आप-आपरै काम-धंधै लागता। कागदर गांव रा मुखिया वेलजी रै घंरा मांय सगळा मिनख इण रसम री वजै सूं अेकठा व्हिया। अम्बावी छेटी ऊभी सगळी चैळ-पैळ दैख री ही। अम्बावी वेलजी अर थावरी री पैली संतान ही। अम्बावी सूं नान्हा दो भाई अर दो बैनां ही। अम्बावी नै आज सूं दस बरस पैलां रो वो दिन याद आयग्यो, जिण दिन ई सगळा मिनख उण रा घरां मांय केसर रा छांटा सारू भेळा व्हिया हा। जद सगळा मिनख जंगळ री दिसा मांय निकळ्या उण रा पाछै अम्बावी री मां थावरी भी कठैई निकळगी अर वा पाछी कोनी आयी। उण समै अम्बावी री उमर बारह

साल ही अर उण री सब सूं नान्ही बैन री उमर तीन बरस री व्ही। उण री मां उणां सगळां नैं छोड'र निकळगी। अचाणचक अम्बावी रा माथै सगळी जिमेवारियां पड़गी।

घरां रा सगळा काम करणा अर नान्हा भाई-बैनां नै संभाळणा। अम्बावी घणा कम दिना मांय टाबर सूं खूब मोटी व्हैगी। काळी रंगत अर साधारण नैण-नक्स वाळी अम्बावी घर, खेत अर नान्हा भाई-बैनां री सार-संभाळ करती। ईं तरयां कठै दिन ऊगतो अर कदै आथमतो उण री काई खबर कोनी पड़ती। थावरी रा जावा सूं लगभग अेक महीनै पाछै किणी मिनख उणरै घरां आय'र थावरी रो पतो बतायो। थावरी नातो कर लीधो अर वा उण रा सागै नातै गयी परी।

अम्बावी नैं उणरी मां सूं मिलण अर उणरै पाछा घरां आवा री आस बंधी ही। हाल तांई वा औ कोनी मान सकी कै उणरी मां उण सगळा टाबरां नै यूं छोड'र जाय सकै। उण रात वेलजी रा घर मांय उणरै सगा-संबंधी मिनख अेकठा व्हिया अर झगड़ै री रकम लेवण सारू वातचीत करण लाग्या अर थोड़ा दिना पाछै वेलजी रै परिवार रा मिनख, समाज रा मोतबीर थावरी रा नूंवा सासरै गिया अर झगड़ै री रकम लेय'र पाछा घरां आयग्या अर इण तरयां अबै सगळा समाज नैं थावरी रै नातै जावण सूं किणी तरै री आपत्ति कोनी ही। खुद वेलजी नै भी नीं। घणी खरी आपत्ति ही अर कठैई कीं खटक रियो हो तो वा ही अम्बावी। वा इण सब नैं हाल तांई स्वीकार कोनी कर सकी ही। उणनैं उणरी मां रै सागै बिताई जूनी यादां याद आयरी ही। अम्बावी समझ नीं सक रैयी ही कै कांई झगड़ा री रकम चुकावो अर सगळा जूना रिश्ता-नाता अेक झटका मांयनै खतम! मां नैं कांई कदै उण रा घर, नान्हा टाबरां, खेत अर खेत रा रूंखड़ा, नान्ही बकरियां याद भी आई व्हैला। इण सगळां मांय म्हां टाबरां रो कांई कसूर हो अर जे इसो कदम उठावणो ईज हो तो म्हां टाबरां नैं जलम क्यूं दीधो। यूं नातै जावा वाळा मिनखां नैं औ भगवान टाबर क्यूं देवै! यूं विचारती मां नैं याद करती कदै रोवती तो कदैई मां पै मोकळी रीस करती। उणनैं मन ई मन मांय गाळियां देंवती, पण इण सगळां सूं कांई असर कोनी होयो। उणरी मां कदैई पाछी कोनी आयी। अर अबै उणरी मां थावरी रो इण घर मांयनै आवा रो गेलो वेलजी आप ई हमेस वास्तै बंद कर दीधो। वेलजी भी नूंवो नातो कर लीधो अर इण घर मांयनै नूंवी बीनणी रा रूप मांय मंगळी आपरा कदम आगै बधाया। अम्बावी अर उणरा नान्हा भाई-बैन कांई करता! उणरी नूंवी मां घरां आयगी ही। पण नूंवी मां मंगळी रौ वैवार इण सौतेला टाबरां साथै घणो चोखो कोनी हो। मंगळी नैं इण टाबरां री फौज सूं कांई लेणो-देणो नीं हो। वा उदासीन ही। सगळा अेक घर मांय रैय रैया हा, इण सूं वत्तो और कीं नीं। वेलजी पैलां सूं ईज महुड़ी रा नसा मांय धुत्त रैवता हा। उणनैं अम्बावी अर दूजा टाबरां रै मांय कोई खास लगाव कै रुचि नीं ही। अम्बावी उणरी मां अर बाप रा नूंवा नाता सूं घणी झट उमर सूं पैलां मोट्यार व्हैगी अर आपरा भाई-बैनां री सगळी जिमेवारी आपरै माथै ओढ लीधी। अम्बावी अबै

 ISSN : 2320-0995

वेलजी, नूंवी मां मंगळी अर उणरा भाई-बैनां सगळा रै विच्चै सामंजस्य बैठावती फिरकणी ज्यूं आखा घर मांय फरकती रैवती अर सगळां रो काम करती, उणनैं खुद रो कीं होस नीं रैवतो। यूं ईज दिन उगम रिया हा अर आथम रिया हा, उण रै वास्तै कोई नूंवी वात कोनी व्ही। उणरै घर रै पाछै महुड़ा रा घणा जूना घेर-घुमेर रूंखड़ा हा। जद उण रूंखड़ा पै फूल आवणा सरू व्हैता तो अम्बावी सगळा सूं पैली उठ'र फूल चुणवा रो काम निपटावती, महुड़ा रा फूल वत्ता तो परभात री वेळा नीचै खरता अर जो फूल आपरी मरजी सूं नीचै खरता उण फूलां नैं ईज चुणवा अर अेकठा करवा रो काम करणो हो। अम्बावी नै सगळा कामां सूं औ काम अणूतो चोखो लागतो। व्है सकै, औ उणरै मोट्यारपणै री निसाणी हो, जठै अम्बावी नैं आपरा खुद रा विसय मांय विचार करवा रो मौको मिलतो, उण समै वा अेकली व्हैती। आपणा सूं बंतळ करती। महुआ रा फूलां री मादक गंध उणरा नथुना सूं होय'र उण री ठेठ सांसां मांय अेकमेक व्है जावती। वा उण फूलां नैं कदै हाथा मायं लेय'र मुळकती तो कदैई उणरी गंध नैं गैरी सांस लेय'र आप में भर देवणो चावती। महुड़ा रा रूंख उणनै आपरै जीव सूं भी व्हाला लागता अर उणरा फूलां री गंध सूं अम्बावी मांय भी कठैई नूंवो कांई ऊग रियो हो, जो स्यात वा जाणती या औ बूढो डोकरो महुड़ो या फेर अै नान्हा-नान्हा महुड़ा रा फूल। अर किणी नैं भी कोई खबर कोनी व्ही, अम्बावी नान्हा फूलां नैं कदै गूंथ अर उणरी चोटी मांय लगाय देंवती तो कदैई उणरी सौरम अंतस मांय भरीजती वगर काम वगर बात काम करती मुळकती जावती।

अम्बावी टोपला मांय महुड़ा रा फूल भेळा करती अर उणनैं पुराणा माटी रा हांडा मांय भर देंवती, इण सगळा फूला सूं, वेलजी देसी तरीका सूं हथकढी महुड़ी बणावतो अर उणनै पीय'र उण नसा मांय मस्त रैवतो। अम्बावी सोळवा साल मांय कदम धरयो हो, पण सोळवा साल रा कोई भी लक्छण उणमें कोनी आया। न तो उणरी साथणिया ज्यूं शरीर रा बणावट मांय कोई खास बदळाव।

उणरी अेक खास साथण कमला उणनैं ईं विसै मांय बतायो पण औ स्याणपणो उणमें नीं दीख्यो। कमला कैयो, ''साची बता, थूं ईं विसै में कांई नीं जाणै! खाव काळा बावसी री सौगन।''

अम्बावी काळा बावसी री सौगन खावती नाड़ हलाय दीधी, ''नीं, म्हनैं कीं ठाह कोनी इण विसै मांय, म्हनैं कुण कैवतो? अर थनैं कुण वतायो ईं विसै में?'' अम्बावी पूछ्यो।

कमला मुळकती बोली, ''म्हारी मोटी बैन, आ कैवै, औ छांटो छोरी रै सयाणपण री निसाणी व्हिया करै। सयाणपण रो वो छांटो उणनै तो इण छांटा रा विसै मांयनै कांई खबर कोनी व्ही, अर व्हैती भी कियां? उणरै घरां कुणसी उणरी मां बैठी ही जो उणनै उण

रा सयाणापणा रा होवा री निसाणी वतावती। अम्बावी उण छांटा अर उण स्याणपणै री वाट ईज जोवती रैयगी।

अेक दिन सांझ री वेळा जद अम्बावी ढोर-ढींगर रै वास्तै घास काट'र घरां आई तो वा देखै कांई कै उणरी गुवाड़ी मांय घणा मिनख अर लुगायां अेकठी व्है री ही, पण सगळा मिनख-लुगाई उणरै वास्तै नूंवा ईज हा। अम्बावी उण सगळा नैं पैली दाण आपरी गुवाड़ी मांय देख्या हा। वा हाक-बाक व्हियोड़ी गुवाड़ी मांय आय'र ऊभी रैयगी। उणी समै उणरी नूंवी मां मंगळी उणनै इसारा सूं ओवरा मांय बुलाय लीधी अर अम्बावी वगैर किणी पूछताछ मंगळी रै भडै आय ऊभी व्ही। अम्बावी कीं पूछती उण सूं पैलां ई मंगळी बोली, ''गुवाड़ी मांय बैठ्या मिनख-लुगाई सगळा थारै सासरै सूं आया है। म्हे थारै वास्तै नूंवा गाभा काढ्या है। थूं झट सूं इणां नैं पैहर'र त्यार व्है अर पाछै बारणै गुवाड़ी मांय आय जाव। अम्बावी सवाल पूछती आंख्यां सूं मंगळी रा उणियारा पै अेक निजर नाखी अर बोली, ''कांई म्हारो ब्यांव होवण वाळो है?''

मंगळी कैयो, ''ब्यांव तो थारो घणो पैली होयग्यो हो। आज तो थारो गोणो व्हैला अर कालै परभातै थनैं सगळा मिनख सासरै विदा करा'र लेय जासी।''

अम्बावी उणरी बातां सुणी तो ठूंठ ज्यूं ऊभी व्है'र सुणती ईज रैयगी अर मन मांयनै सोचवा लागी कै आ कसी रसम अर कस्या रिवाज, जिण घर नैं अर घर रा मिनखा नैं आपणा जीव ज्यूं व्हाला राख'र उणां रै साथै सुख-दुख देख्या अर मोटयार व्हिया अर अब अेक घड़ी मांय सगळो बदळ जासी। नूंवा मिनख, नूंवा घर-गुवाड़ी, सगळो नूंवो फकत वा अेकली ईज जूनी। उणरी आंख्यां मांय तळाइयां भरायगी, गळो रुंधीजग्यो अर आंख्यां सूं धुंधळा दीखवा लाग्यो। आंख्यां सूं गंगा-जमाना वैवा लागी। मंगळी स्यात आज पैली दाण उणनै काळजा सूं लगाई। वा भी लुगाई ही अर सगळी लुगाइयां इण दरद सूं गुजरै, इणनैं मैसूस करै ईज है। मंगळी उणनैं छाती सूं काठी चिपकाय दीधी, अम्बावी घणी देर तांई रोवती रैयी। मंगळी उणनैं चुप करावती बोली, ''अबै रोव मती, सगळी लुगाईजात विधाता रा घर सूं आपरी किस्मत मांय औ ईज लिखाय'र इण धरती पै आवै, अब इणमें कांई फेरबदळ कोनी होय सकै। थारो बापू कैवै कै जद थूं छऊ महीनां री ही, उण समै थनैं परात मांय बैठा'र फेरा देय दीधा हा अर थारो ब्यांव होयग्यो, अब थारै गोणै री उमर होयगी, इण वजै सूं सगळा नैं बुलाय लीधा। अबै थूं अै नूंवा गाभा पैहर अर त्यार व्हैजा।''

अम्बावी नैं इण सगळी रसम-रिवाजां मांय कोई खास उछाह निजर कोनी आयो। ठूंठ री ज्यूं जिण ज्यो कैयो, वो कर दीधो मानो कोई लुगाई री ठौड़ रोबोट होवै। उणरी साथणियां सगळी रसमां मांय उणरै साथै ईज ही अर वात वगर वात हांसी-ठिठोळी करती रैयी। इण तरयां अेक-अेक कर'र सगळा रसम-रिवाज दिन में निपटग्या अर रात

आखी मैंदी मांडणा अर गीत जागण मांय निकळगी। आगलै दिन गौणा री रसमां पूरी करयां पाछै अम्बावी आपरै सासरै आयगी। सासरै मांय पैलो दिन कुळदेवता री धोक, उणरी पूजा-अरचना अर गीत मांय बीतग्यो। अबै सांझ होयगी, दिन कठै व्हीर व्हियो, अम्बावी नैं खबर कोनी लागी। सांझ ढळ्या घर री लुगायां अम्बावी रो बणाव-सिणगार करयां पाछै उणनैं ओवरा मांय बैठा'र बारणै आयगी। गुवाड़ी मांय लुगायां उणरै कुळदेवता रै दीवो जोय'र गीत गावै ही। गारा-माटी सूं बण्या ओवरा नैं अम्बावी अेक निजर निरख्यो, उण रै पीयर रै घर जस्या ईज अै भी घर हा, कोई नूंवी बात कोनी व्ही। रात रा दो पैर चेतक घोड़ा ज्यूं व्हीर व्हैयग्या, दिन भर री थाकी अम्बावी नैं नींद रा झोंका आवा लाग्या, अतराक मांय ओवरा मांयनै उणरो घरआळो आय'र ऊभो व्हियो। महुड़ी री गंध आखा ओवरा मांय फैलगी। दिन ऊग्यो, परभात व्हियो अर उणरो घरवाळो उणनैं उणरा पीहर कागदर छोड आयो। अम्बावी इण विसै मांय कीं कोनी कैयो अर अम्बावी रो घरवाळो भी आपरी जबान कोनी खोली। कुण जाणै कांई होयो! दोय धणी-लुगाई आपरो मूंडो कोनी खोल्यो। अम्बावी घरै आय'र पाछी आपरा जूना-पुराणा कामां मांय लागगी। पीहर मांय सगळां नैं घणो विचार व्हियो। वै अम्बावी सूं वात करणो चावै हा, पण वा कीं कोनी बोलती। धींरै-धींरै सगळा उणसूं हारग्या अर आपरै काम-धंधै लागग्या। उण घर मांय काम री कदी कमी नीं रैयी। भरयो-पूरो घणो मोटो परिवार हो। अम्बावी रा चार भाई बैनां रै सागै नूंवा चार-भाई बैन अबै उण घर मांय छोटा-मोटा नौ टाबर हा। कदै-कदैई पड़ोस री साथणियां उण सूं बात पूछवा री कोसिस करती तो कदी बडी-बूढी लुगाइयां उणनैं पूछती पण अम्बावी वात रो रुख मोड़ देंवती अर आपरा कामां मांय लाग जावती। वै कदैई उणरा मूंडा सूं उणरा घरवाळै वास्तै कीं नीं कैयो।

अम्बावी रै सासरै उण रात जको घट्यो वो अम्बावी, उणरो घरवाळो अर ओवरा मांय बळतो दीवलो ईज जाणता हा अर इण सगळा रा गवाह भगवान। इणां रै टाळ किणी नैं ई कानोकान खबर कोनी पड़ी कै कांई बात व्ही। सगळा दबी जबान सूं वाता करता, कितरा ई कयास लगावता कै कीं तो गड़बड़ होसी, पण कांई गडबड़ व्है सकै, आ किणी नैं ई ठाह कोनी। मिनख रा चरित्र पै औ समाज वत्ती वात कोनी करै अर करै भी क्यूं? औ समाज भी तो इण मिनखां रो ईज है, इण रा कानून-कायदा जद चाईजै आपणा हिसाब सूं हुंसियार मिनख बणावै अर बिगाड़ै, उणनैं आपरी मरजी ज्यूं तोड़ै-मरोड़ै अर लुगाई नैं हाल तांई मिनख सूं बराबरी रो दरजो कोनी मिल सक्यो अर इण सगळी वजै सूं अम्बावी रा मिनख पै किणी भी कीं आंगळी कोनी उठाई। फकत आंगळी री दिसा अम्बावी रै साम्हीं ही। सगळा इल्जाम वगर किणी सुणवाई अम्बावी रै माथै लगाय दीधा। पण अम्बावी री मून कोनी खुली। थोड़ा दिनां पछै अम्बावी पैलां ज्यूं ई घर रा कामां मांय घुळगी। यूं ईज दिन ऊग्या अर आथमग्या। दिन, महीना अर साल यूं ईज व्हीर व्हैता गया। वेलजी अबै

महुड़ो वत्तो पीवा लागग्यो हो अर इण वजै सूं घणो मांदो रैवा लागग्यो। मंगळी बीमारी री वजै सूं भगवान रै घरे पूगगी। अम्बावी, उणरा सगळा भाई-बैना रा ब्यांव अर गोणा कराया। अम्बावी उण घर री मुखिया रो किरदार निभाय रैयी ही। वा घर ई संभाळती अर खेत भी। वा आपरी सगळी जिम्मेवारी घणी हुंसियारी अर समझदारी सूं निभाय रैयी ही। इण वजै सूं घर मांय भाई, भावज अर भतीजा-भतीज्यां रा भरया-पूरा घर मांय पैल पूज आदरजोग अम्बावी ईज ही अर अम्बावी इण मान-सम्मान री पूरी हकदार भी ही। अम्बावी आपरी सगळी उमर इण घर अर घर रा मिनखां रै नांव कर दीधी ही। अम्बावी अड़ोस-पड़ोस अर सगळा फळा अर गांव मांय सगळां री मदद करवा रो काम करवा लागी। वा भलांई भण कोनी सकी, पण वा लुगाइयां नै भणाई रो मोल बतायो अर टाबरियां नैं स्कूल भेजवा री सौगन दीधी। समाज री कुप्रथावां नै बंद करवा रो अम्बावी संकळप लीधो। मिनख अर लुगाइयां री बरोबरी अर लुगाइयां री शिक्षा उणरी पैली चाह ही अर उणरी मैणत रंग लाय रैयी ही। अम्बावी सगळी लुगाइयां अर छोरयां नैं आतमनिर्भर बणावा री दिसा मांय काम चालू कीधो, जको लगातार चालतो रैयो। समाज रा मिनखां नैं आपरी टाबरियां नैं स्कूल भेजवा री राय देंवती। अम्बावी नैं ख-बाड़ी री भी आछी समझ ही। इण सूं खेतां मांय कांई समस्या आवती, रूंख मांय कोई रोग बिमारी व्हैती तो वा उण रो देसी तरीका सूं इलाज बतावती। मिनख अर लुगाइयां आपरै घरां री नान्ही-मोटी समस्या अम्बावी रै घरां लेय'र आय जावता अर वा उणां री पूरी मदद करती। अम्बावी पूरा गांव री अेक पैचाण बणगी ही, जिणसूं मिनख-लुगाइयां सगळा प्रेम-स्नेह राखता अर अम्बावी वां सगळां री हर संभव मदद करण रै वास्तै हमेस त्यार रैवती।

आज पाछी केसर छांटा री रसम रो दिन हो। अम्बावी री गुवाड़ी मांय मिनख इण रसम रै वास्तै परभात सूं ईज भेळा होवा लागग्या। अम्बावी मोटी परात मांय केसर घोळ रैयी ही अर केसर घोळता आपरा हाथां नैं देखती यूं ईज मुळकवा लागी। वा विचार कीधो—कांई व्हियो जे भगवान उणनैं भी केसर रो छांटो लगा'र इण धरां मांय भेजी। कांई व्हियो जे स्याणपणा रो छांटो उणरै हाल तांई नीं लाग्यो। पण उणरा काम सूं वा आज सगळी मिनखजात रै मांय मिसाल बणगी ही। भगवान रो अर्द्धनारीश्वर रूप सक्ति रो प्रतीक है अर वो सगळा रै सारू पूजनीय व्है। इण तरयां उणरा अै दोई मजबूत हाथ मैणत करवा अर हर परेसानी रो हल करवा सारू दीधा है। वा इण हाथां सूं कदै ताळी कोनी पीटसी अर कदैई मांग'र कोनी खासी। अम्बावी गरब सूं ऊभी ही अर केसर रा छांटा सारू रांखड मांय रवाना व्ही। सगळा मिनख उणरै साथै चाल रैया हा। आज इण रसम री अगवाई अम्बावी रा मजबूत हाथां मांयनै ही।

◆◆

ISSN : 2320-0995

श्याम महर्षि

प्रगतिशील सुर रा सुरीला गीतकार गजानन वर्मा

मुलक री आजादी रै साथै-साथै घणकरा प्रदेसां री मातृभासा नैं संवैधानिक मान्यता मिली, पण राजस्थान री मातृभासा राजस्थानी उण टेम भी राजनीति री सिकार हुयगी। फेरूं ई बा लोगां में आपसरी री बोल-चाल अर लोकसाहित्य में जींवती रैयी। दूजो पख औ है कै उण बगत कवियां आपरी वाणी अर रचना रै पाण जनपख नैं मजबूत करण री ठाणी। औ बो बगत हो जिण में राजस्थान रा अलेखूं कवि आपरै न्यारै रूप-रंग नैं नूंवी पिछाण दी। उण बगत रा कवियां में गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद', रेंवतदान चारण, सत्यप्रकाश जोशी, मनुज देपावत, कु. चन्द्रसिंह बिरकाळी आद रा नांव गिणाया जाय सकै। बां कवियां मांय अेक कवि गजानन वर्मा भी हा जका आपरै गीतां रै पाण आखै मुलक में आपरी धाक जमा ली ही। अन्याव अर जुलम रो विरोध कवि नैं करणो जरूरी है। पण जको रचनाकार आ मानै कै अन्याव कदैई खतम नीं हुय सकै, उणनैं इण पंगत मांय नीं राख्यो जाय सकै। कवि खातर आ कहीजै कै बो जुगद्रष्टा हुवै। आ बात इसा कवि खातर लागू नीं हुवै।

उण बगत रा कवियां मांय अेक नूंवी अर सुथरी समझ साम्हीं आवण लागगी ही। राजस्थान में प्रगतिशील लेखक संघ री थरपणा माथै बोलता थकां गजानन वर्मा कैयो कै म्हैं राजस्थानी रो कवि हूं। राजस्थानी म्हारी ई मातृभासा नीं, बल्कि आम राजस्थानियां री भासा है, करसा अर मजूरां री भासा है। राजस्थानी संस्कृति इण री खुदोखुद री मठोठ है।

ठिकाणो :
महर्षि प्रिंटर्स
पंचायति समिति साम्हीं
श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
मो. 9414416252

गजानन वर्मा री कृति 'सोनो निपजै रेत में' री भूमिका में लूंठा विद्वान नरोत्तमदास स्वामी लिख्यो है कै वर्मा रो कवि अेक गीतकार है। उणरी भावना लोकजीवण रै साथै है। कवि लोकचेतना री हर गतिशीलता रै साथै पावंडा भरै। उणरी रचना लोकचेतना सूं सराबोर है। औ ईज कारण है कै गीत में कल्पना री ऊंची उडाण भरता थकां भी बै धरती री माटी री सौरम सूं जुड़्योड़ा रैया है। बै प्राकृतिक चित्राम नैं भी आपरै अंतस में उतारता रैया है। हरया-भरया खेतां रो सौंदर्य निरखै तो साथै ई उण हरियाळी रै लारै मैणत री धड़कण छिप्योड़ी है। उणसूं बो बेखबर नीं है। गजानन वर्मा आपरै गीतां में सो-क्युं गायो है जको सोवणो है, जिणमें अचंभो, दुख-दरद अर जथारथ है।

गजानन वर्मा रो सगळो सिरजण आंचलिकता सूं सराबोर है। चाकी-चूल्हो, खेत-खळा, पांख-पंखेरू, समाज-परिवार आद रा घणकरा प्रसंगां में लोकजीवण जाणै खुद ई आपरै मन री बात प्रगट करै। *('सोनो निपजै रेत में', पाना 10-11)*

राजस्थान में छठै दसक री पीढी रा कवियां में गजानन वर्मा आगीवाण पंगत रा कवि है। उणां री कवितावां नैं आखै मुलक में सराईजी। राजस्थान, बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र आद केई प्रदेसां रै स्हैरां अर गांवां में हुवण वाळा सैकड़ां कवि-सम्मेलनां में कवि गजानन वर्मा हजारां री संख्यां में सुणण वाळां नैं मंत्रमुग्ध करया है। लोकगीत अर लोकनृत्यां रो सांतरो ग्यान हुवणै रै कारण गजानन वर्मा राजस्थानी काव्य नैं नूंवा आयाम दिया अर मौलिक धुनां में गीत गाया। बै राजस्थानी में ध्वनि-गीतां री शैली रा पैला सिरजक हा। उणां रै पछै इण परंपरा रो अनुसरण हुवण लागग्यो। *(पानो-23)*

राजस्थान रा लोक-साहित्य रा मर्मज्ञ विद्वान अर 'मरुभारती' पत्रिका रा संपादक डॉ. कन्हैयालाल सहल गजानन वर्मा रै गीत-संग्रै 'सोनो निपजै रेत में' माथै आपरी दीठ राखतां कैयो है कै गजानन वर्मा आप रा गीतां में राजस्थानी लोकगीतां री धुनां रो प्रयोग करयो है। उणां री अेक खासियत आ भी रैयी है कै बै लोकगीतां री धुनां रो रूपांतरण भी करयो। कैवणै रो मतलब औ है कै केई धुनां नैं मिला'र नूंवी धुनां ई बणाई है। आं धुनां में उणां अद्‌भुत प्रयोग करयो है जको राजस्थानी लोकगीतां रै क्षेत्र में नवजागरण री सूचना देवै। आ उल्लेख जोग है कै धुनां री दीठ सूं राजस्थान घणो सिमरथवान है। वर्मा री संगीत बाबत अंतस री दीठ अर उण बगत उणां रो तकनीकी ग्यान भी उणां रै इण सिरजण में खिमता पुगाई। सफळ लोकगीत लिखणो कोई हंसी-खेल नीं है। लोकगीत बो ईज लिख सकै जको लोकजीवण में रच्यो-पच्यो हुवै। लोकजीवण रै क्रिया-कळाप रै साथै जीवटता सूं संपर्क हुवै। बो ईज लोकगीतां रो आगीवाण बण सकै।

गजानन वर्मा खाई खोदणिया, सड़क बणावणिया, रूई कातणिया मजूरां नैं नेड़ै सूं देख्या अर उणां री भावनावां नैं समझी। बै केई बरस उणां रै साथै रैया। करसा रो दुख-सुख समझ्यो। उणां री व्यापारियां रै साथै ई घणी जाण-पिछाण रैयी, जिणसूं उणां नैं सोसक अर सोसित री बातां समझ में आयी अर गीत-रचना रै कारज में घणी सफळता मिली। गजानन वर्मा रै गीतां में अनुकरणात्मक सबदां रै पाण प्रभावित करणै री विसेसता देखी जाय सकै। लोकगीतां में कित्ती सफळता रै साथै उण रो प्रयोग कर्‌यो जाय सकै—'पिंजारा, हिः हो'—जिसा सबद तो सांस री ध्वनि साथै जा पूग्या। राजस्थान अर राजस्थानी रै इण लोककवि नैं बधाई देंवता थकां म्हनैं विस्वास है कै कवि रै लोकगीतां रै साथै-साथै राजस्थान री धरती लगोलग ताल देंवती रैसी। *(पाना 27-28)*

1960 ई. रै आसै-पासै जका कवि चावा-ठावा हा उणां में गजानन वर्मा सै सूं बेसी राजनीतिक कवि हा। उणां रै पैलै गीत-संग्रै 'सोनो निपजै रेत में' रा गीत मार्क्सवाद सूं प्रभावित रैया है, पण राजनीति में भी बै लोकतंत्र रा हिमायती हा। बै राजनीतिक जनतंत्र नैं घणो महत्त्व देवै। आज कविता सूं राजनीति ई नीं विचारधारा नैं भी खतम करणै री प्रक्रिया दीसै। आं सगळां हालात सूं कवि अणजाण नीं है, बो आपरै बगत नैं पिछाणै अर अमूझ'र आपरी अेक कविता में रोस प्रगट करै :

चेत बावळा चोर लुटेरा लूंटै है धन-धान रै
धरती अब पसवाड़ो फेरै, जाग मजूर-किसान रै

×× ××

धरती रै बैर्‌यां नैं स्याणा, बेगो आज पिछाण रै
धरती अब पसवाड़ो फेरै, जाग मजूर-किसान रै

(सोनो निपजै रेत में, पानो 31)

गजानन वर्मा समाज रै उण लोगां रै बिचाळै रैय अनुभव कर्‌यो हुवैला। सामाजिक संबंधां में गैर बराबरी देखी-समझी हुवैला।

प्रगतिशील लेखन अर इप्टा सूं जुड़्योड़ा हुवता थकां भी गजानन वर्मा बेगा ई गेयमुगत कविता सूं मुगत रैय'र आपरी रचना नैं जथारथ री जमीन माथै खड़ी करी, उणां री रचना में जठै गांव ऊभो है, उण माथै कस्बाई अर मध्यवरग रो प्रभाव नीं रै बरोबर है। गजानन वर्मा आपरै गीतां में गांव रो अनुभव अर खेत्रीयता री दीठ रो न्यारो दीठाव करै। वर्मा आपरी कविता में राजस्थानी री परंपरा सूं परहेज नीं करै। आपरै बगत (साठोत्तरी) री कवितावां रै मुहावरां साथै सदा संघर्स कर्‌यो। आज भी मुलक मांय मजूरां अर किरसाणां रा हालात कोई खास सुधर्‌या नीं है। गरीब घणो गरीब अर अमीर घणो अमीर हुवतो जा रैयो है। औ मिथक ओजूं भी भांगीज्यो नीं है।

गजानन वर्मा नूंवी चेतना रो संदेसो देवण वाळा कवियां में सिरमौर है। वै हमेस औ ध्यान राखता कै रचना में नूंवोपण हुवणो चाईजै। जिंदगाणी री छोटी-बडी बातां सूं लेय'र संस्कृति, समाज अर स्वाभिमान खातर महताऊ अबखायां माथै घणो ई लिख्यो अर गायो।

गजानन वर्मा रै 'बारहमासा' (रितुकाव्य) माथै बंतळ करां उण सूं पैलां आ बात कैवणो चावूं कै आखी दुनिया में रितु माथै काव्य लिखीज्या है, क्यूंकै रितु प्रकृति रो अेक हिस्सो है। इण सूं मिनख अलायदो नीं हुय सकै। आपणै मुलक रै साहित्य में भी रितु काव्य री रचना री परंपरा घणी जूनी है। वैदिक जुग रै साहित्य में खास कर अथर्ववेद में 6 रितुवां रो बखाण मिलै है। आगै चाल'र जैनियां रै प्राकृत ग्रंथ अंगविज्जा (विद्या) में डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल री लिख्योड़ी भूमिका रै अनुसार 6 रितुवां रो बखाण बिरछ, बनस्पति, पुष्प, सस्य अर रितुवां रै बखाण सारू 42 श्लोकां में जाणकारी मिलै।

'अंगविज्जा' अग्रवाल जी रै लेख मुजब चौथी शताब्दी में रच्योड़ो ग्रंथ है। इण सूं औ प्रमाणित हुवै कै जैन साहित्य में रितुवां सारू लिखणै री परंपरा घणी पुराणी है। श्री अगरचंद नाहटा आपरै ग्रंथ 'प्राचीन काव्यों की रूप-परंपरा' में फाल्गुन मास री विसेसता माथै लिखै कै नर-नारियां रै मिथुन उत्सव मनाणै अर आमोद-प्रमोद रो महीनो हुवै। (*बारहमासा-संज्ञक रचनाएँ, पानो 30*)

खुद गजानन वर्मा 'बारहमासा' री भूमिका में लिखै कै श्री नाहटा सूं म्हनै घणकरा प्राचीन बारहमासा देखण अर बांचण रो मौको मिल्यो। कैवण रो मतलब औ है कै संस्कृत, प्राकृत अर अपभ्रंस सूं लेय'र आज री राजस्थानी भासा में बारहमासा लिखीजता आया है, जिणमें रितु कवितावां, चौमासा अर बारहमासा री घणी-घणी बानगी देखण नै मिलै। पं. सूर्यकरण पारीक आपरै ग्रंथ 'राजस्थानी लोकगीतों में बारहमासा' में लिख्यो है कै बारहमासा री परंपरा चारण-साहित्य में भी मिलै। समकालीन राजस्थानी साहित्य में विश्वनाथ शर्मा 'विमलेश' आपरै 'सतपकवानी' कविता-संग्रै में बारह महीनां रै न्यारै-न्यारै गीतां में बारहमासो री रचना करी है।

गजानन वर्मा रै कविता-संग्रै 'सोनो निपजै रेत में' री अेक कविता बारहमासा नांव सूं छपी है। साहित्यकार साथ्यां गजानन वर्मा नैं कैयो कै बारहमासा कविता री बानगी सूं म्हारी चावना है कै आप इण कविता री भांत बारहमासा माथै अेक आखी काव्य रचना लिखो। वर्मा इण बात नैं गंभीरता सूं ली अर बारहमासा काव्य री अेक पूरी पोथी लिख दी। आ पोथी कीं लीक सूं हट'र इण भांत है कै आ आखी रचना गेय है। आप पोथी-परंपरा में फेरूं नूंवो प्रयोग करता थकां हरेक गीत री सुरलिपि रा संकेत दिया है जिणसूं इण रचना रो महत्त्व घणो बधग्यो। कृति रा सगळा गीत चैत रै महीनै सूं लेय'र माघ महीनै तांई वियोग अर फागण महीनै में सिणगार री भावना रो लेखो-जोखो दियो है। इण बारहमासा

री आ खूबी है कै इणनैं बीच-बीच में जठै मुक्तां नैं कथनी में जोड़ां तो संगीत रूपक (ओपेरा) ज्यूं रंगमंच माथै भी खेल्यो जा सकै। इण बारहमासा में राजस्थान री लुगाई मध्यवर्गीय समाज अर परिवार री कामकाजी लुगाई है जकी घर रो धंधो, खेतीबाड़ी अर पसुधन रो कारज भी करै। बारह महीनां लगोलग आ विरह सूं झुळसै अर उणरी व्यथा कवि आपरी रचना रै माध्यम सूं प्रगट करै।

कवि गजानन वर्मा रो गांव उतराध-आथूण रै बिचाळै है, जको अन उपजाऊ रेगिस्तानी इलाको है। अठै सताब्दियां सूं अकाळ पड़ता रैया। इण खातर अठै रो जोध जवान रोजी-रोटी रै जुगाड़ खातर परदेस जावतो रैयो है। बो साल-दो साल बाद पाछो घरां बावड़तो। औ ईज कारण है कै बारहमासा री नायिका चैत सूं माघ तांई विरह रा गीत गावै। जद बो फागण में परदेस सूं बावड़ै तो उणरी लुगाई जिण उच्छब री कल्पना करै, बा घणी सरावण जोग है। चैत महीनै रै गीत री अेक बानगी देखो, जिणरी सरुआत कवि इण भांत करै :

चैत महीनो चित-चावण मन-बिलमावण कौं
रास-रचावण कौं, गणगौर्‌यां आवण कौं
घर छोड'र पिवजी थे क्यूं चाल्या परदेसां
कींकर लागैलो थां बिन जी कामण कौं

(बारहमासा, पानो 37)

चैत महीनै में परदेस गयोड़ा पिवजी नैं आठ महीनां हुवण लाग्या, कोई समाचार-बाड़ी नीं। काती आयगी। दीवाळी साम्हीं है। कामण नैं आपरै मोट्यार री ओळ्यूं आवै, बा मन मांय इण भांत सोचै :

दीवाळी कातिक में, सासू सुगणी जाया
झुर-झुर पिंजर होगी कंचन-वरणी काया
म्हैलां दिवलो जोऊं, रात्यूं बाटां हेरूं
लिछमी हाजर ऊभी बिणजारा कद आया

(पानो, 79)

इण भांत इग्यारह महीना हुयग्या। कामणी विरह सूं दुखी है। फागण रो महीनो आयग्यो। पिवजी परदेस सूं पधारग्या है। घर री कामण रो हरख उल्लेख करण जोग है। बा आपरो हरख इण भांत दरसावै :

धन-धन भाग सराऊं म्हारा, पीव झरोखा आज तळै
होळी सो होळी फागण में, दिवलो सारी रात जळै

दिन-दूणी अर रात चौगणी, थारी म्हारी प्रीत पळै
सासू-सुगणी री धण-धरती, दूधां न्हावै पूत फळै

(पानो, 103)

इण भांत गजानन वर्मा री रचना 'बारहमासा' नैं रितु काव्य कैय सकां हां। इणमें मिनखपणै में कुदरत सूं निपज्योड़ा सुख-दुख रा प्रगट्योड़ा भाव जीवण रा मेळ-मिलाप सूं रस-राग री म्रिस्टी सारथक हुवै। गीतकार वर्मा आपरी बात इण रचना री सरुआत में लिखै। वै कैवै कै मिनख रै जलम-जलम री साथण नारी हियै री काची-कंवळी भावना अर चेस्टावां रो निरमळ नीर उछाळती, रुतां रा बन बागां नैं सींचती दूणै बेग सूं बैवण लागै। वर्मा री रचनावां बारहमासा परंपरा री साख नैं कायम राखता थकां आपरै समकालीन कवियां री रचनावां सूं न्यारी-निरवाळी है।

गजानन वर्मा री 1992 में छपी पोथी 'हेलो मार सुर सिणगार' में गजानन वर्मा रा घणकरा गीत बै है जका जगचावा रैया। अै गीत गेय सैली में लिख्योड़ा है। अै गीत वर्मा चलचित्रां, वीडियो फिल्म, ग्रामोफोन रेकार्ड, दूरदरसन अर रेडियो स्टेशन में गाया। खुद वर्मा इण पोथी री 'म्हारी बात' मांय लिखै कै इण गीतां री बणगट अर छंद-सुर-ताल री मौलिक बंदिसां पर घणो गरब-गुमान है।

वरिष्ठ कवि सीताराम महर्षि गजानन वर्मा रा गीतां माथै आपरी दीठ प्रगट करता थकां कैयो है कै गजानन वर्मा रा गीतां रा सुर भलांई न्यारा-न्यारा है, पण बै प्रकृति रा घणा मनमोवणा चितराम उकेरया है। वर्मा ध्वनि-गीत ई मोकळा रच्या है।

रंगकर्मी अर वरिष्ठ कवि लक्ष्मीनारायण रंगा वर्मा री रचनावां माथै इण भांत आपरी दीठ रो दीठाव करयो है कै गजानन वर्मा फगत अेक गीतकार ई नीं हा बल्कै बै साहित्य-संस्कृति रा जींवता-जागता संगम हा। बै नवी लय-तालां मांय गीत रा प्रयोग करणिया हा अर आपरै सांतरै प्रभावशाली हाव-भाव सूं मनहरणी प्रस्तुति देवणिया जादूगर गीतकार हा। गजानन वर्मा राजस्थानी लोक-संस्कृति नैं चावी करण खातर फिल्मां मांय भी काम करयो। उणां री अेक लघु फिल्म 'हळदी रो रंग सुरंग' खासा चर्चित रैयी। बै खुद ई निर्माता, निरदेसक, लेखक अर संगीत-निरदेसन री भूमिका निभाई। बै केई वीडियो फिल्मां भी बणाई जिणमें बनड़ो-बनड़ी, सपनो अर कुरजां खास लोकप्रिय हुयी। संगीत-निरदेसन रै साथै-साथै वर्मा केई नृत्य नाटिकावां रा लेखक-निरदेसक ई रैया। उण नृत्य नाटिकावां में मीरांबाई, बारहमासा, सत्तर खान बहत्तर उमराव आद खास ही। वर्मा असमिया अर बांग्ला भाषा री फिल्मां में भी जाजी, लोरी धोरी अर चिकमिक बिजुली में अभिनेता अर संगीत-निरदेसक रै रूप में काम करयो।

'हेलो मार सुर सिणगार' नैं अेक पारखी री दीठ सूं देखां तो गजानन वर्मा रै गीतां री आ पोथी घणी महताऊ अर घणी ख्यातनांव रैयी। पोथी रा दो भाग है। अेक में राजस्थान री धरती अर उण माथै रैवण वाळा लोगां सारू लिख्योड़ा गीत है, दूजै भाग में लुगाई रै सौंदर्यबोध रा गीत है। पैलै भाग री बात करां तो इणमें लिख्योड़ा गीत जनवादी रुझान रा है। पैलो गीत 'हेलो मार रे' गांव रै मोट्यार नैं चेतो करावता थकां कवि कैवै :

सींवां पर सांसर मंडरावै
जोरांमरदी खेती खावै
धरती पर हक जोर जमावै।
तूं झूठा ही पापड़ बेलै
अन-धन हाट-पताळां मेलै
कर-कर व्यौपार रेऽऽऽ
हेलो मार रेऽऽऽ

(पानो, 11)

कवियां खातर जिंदगाणी रो कोई खेत्र न तो निषेध है अर न ई त्याग रो है। मिनख रो कोई भी अनुभव बिना काव्य रो नीं हुवै। इसो स्यात ई कोई हुवै जको आपरी जिंदगाणी में गुणगुणावतो नीं हुवै। कवि गजानन वर्मा रै मन में राजकाज री नीति माथै जनता में असंतोष, बेरुजगारी, जन-आंदोलन अर उणी भांत जुलम सैवती देखै, उणरो लेखो-जोखो आपरी कविता में करयो है। उणरी अेक कविता 'कोई धणी न धोरी दीसै' री बानगी :

करसो अन-धन-धान कमावै
बिणज लूट लेवै बिणजारा
ठग-ठग खावै चोर-उचक्का
सांझ-सबेरै मझ-दोपारां
कोट-कचेड़्यां न्याय न लाधै
कुबध-कसाई छुरी पलारै।

(पानो 25)

राजस्थान री धरती वीरां री जलमभोम रैयी है। सैकड़ा बरसां तांई उतराद-आथूण कानी सूं इण माथै जुध रा डंका बाजता रैया है। अठै रा जोध-जवान आगीवाण हुय'र उणां सूं लड़ता रैया अर आपरी आन-बान अर शान खातर शहीद हुवता रैया। कवि आपरी धरती रै लाल नैं सावचेत करती थकी 'बेगो बेगो चाल भायला' री सीख देवै :

माटी हेला मारै रे
हर दिन सांझ-सवारै रे
बैरी बाड़ तोड़ बळ खावै
मझ धोळै दोपारै रे
आडावण बण अड़ज्या भिड़ज्या
हाथ दुनाळी झाल रे।

(पानो 42)

रेगिस्तानी धरती माथै शताब्दियां सूं पड़ता काळ अर सामंती खेतर हुवणै सूं सोसण अर जुलम रो इतिहास रैयो है। आजादी मिल्यां पछै भी गरीब रै घरां दीवाळी मंगसी रैयी।

कवि दीवाळी रै दिन गरीब रा हाल-हुवाल रो वरणन आपरी कविता में करयो है। अेक बानगी इण भांत है :

लिछमी चौबारां चढगी
भूख पसरागी घरां-घरां
मैंगाई सुरसा बढगी
बेकारी सहरां-नगरां
राज फिरै रुजगार बांटतो
राम रसोइयां दाळ गळै
दीवाळी रा दीया जळै।

(पानो 52)

इण पोथी रै पैलै भाग में केई गीत इसा है जका नैं आज लोग लोकगीत समझण लागग्या है। कवि री रचना कवि सूं लूंठी हुवै। औ ईज कारण है कै बगत रै साथै चालतां-चालतां कवि री रचना लोक री हुय जावै अर कवि लोप हुय जावै।

इणी पोथी रै दूजै भाग में 'सुर सिणगार' नांव सूं गीत लिखीज्या है। गजानन वर्मा रै समकालीन कवि रेंवतदान 'कल्पित' प्रीत अर प्रकृतिप्रेम रा कवि हा, जका गजानन वर्मा रै साथै आखै मुलक में कवि-सम्मेलनां में आपरी न्यारी ओळखाण राखता। कल्पित प्रकृति प्रेम री कविता 'बिरखा बीनणी' लिखी, बठै वर्मा भी 'सिंदूरी सांझ ढळी' री रचना करी। ढळती सांझ री वेळा में जद रात पगल्या करै तो कवि उण बगत रो इण भांत सिरजण करै :

सिंदूरी सांझ ढळी
सोनपरी-सी उतरी

 ISSN : 2320-0995

धरती पर अळी-गळी
आय रमै रातड़ली

(पानो, 59)

इणी भांत सावणियै रा लोर माथै अेक कविता 'झिरमिर-झिरमिर बरसण लाग्या' रचना में कवि सावण रै महीनै रो गुणगान करता थकां बिरखा-महिमा रो बखाण करै। कविता री बानगी :

झिरमिर-झिरमिर बरसण लाग्या
सावणियै रा लोर
गीत तंयूल्यां गीरण लागी
नाचण लाग्या मोर।

(पानो, 65)

कवि वर्मा रा गीतां में प्रीत रा गीत घणा मनमोवणा, सुहावणा अर हियै नैं हरखावणा लखावै। बांरो अेक गीत 'हळवां-हळवां होळै-होळै' में प्रीत रो अद्‌भुत बखाण करै। इण कविता री अेक बानगी :

कंवळी काया जोबन छाया
तन डोलै मन है घायल
रग-रग राचै, हिवड़ै नाचै
बंगड़ी बाजै खणकै पायल
जमकर बरसो-बरसो
गुढळा बादळ।

(पानो 110)

कवि गजानन वर्मा प्रीत माथै अेक नूंवी दीठ राखै, इणरै प्रमाण सरूप उणां रा केई गीत है, जिणरी विगत घणी लांबी है। इणां रै गीतां में सिंदूरी सांझ ढळी, गोरी गजगामणी गजब करगी, सजन म्हारो मन, सपनै में साजन घर आया अर चिमक च्यानणी रातां में। आं गीतां में मोट्यार आपरी गजबण माथै उण रो रूप-रंग अर प्रीत री रिमझोळ करतो लखावै।

गजानन वर्मा री अेक पोथी है 'हळदी रो रंग सुरंग' नांव सूं। 1987 में छपी इण पोथी री 'म्हारी बात' में कवि गजानन वर्मा कैवै कै देस-दिसावर में रैवणिया घणकरा प्रवासी राजस्थानी लोग-लुगायां आपरी मातृभासा, साहित्य अर संस्कृति नैं बिसरता जाय रैया है। बै लोग आपरी मायड़ भासा अर रीति-रिवाज नैं आपरै हियै में आत्मसात करै। इण खातर गीतां रै माध्यम सूं रीति-रिवाज री ओळखाण कराणै सारू म्हैं आ खेचळ करी

है। हरेक प्रांत री आप-आपरी भासा, वेशभूसा अर गरब-गुमान हुवै। सगळा प्रांतां में लुगायां जच्चा-बच्चा रै संस्कारां सूं लेय'र ब्यांव-सावा, मरणै तांई रा गीत-भजन हरजस गावती रैयी। सैकड़ा बरसां सूं लोकगीत गावती रैयी है। राजस्थानी लुगायां भी उण भांत री परंपरा सूं न्यारी कोनी। पण कवि गजानन वर्मा अेक न्यारो-निरवाळो अर अद्‌भुत प्रयोग करयो। बै खुद पारिवारिक रीत-रिवाज रा गीत लिख्या। बै गीत उणां आपरी पोथी 'हळदी रो रंग सुरंग' में पिरोया है। पैली बार राजस्थानी गीत-साहित्य री नूंवी धारा अर लोकसैली में लिख्योड़ा ब्यांव-संस्कारां रा गीत घणा सराईज्या।

राजस्थानी समाज में ब्यांव री सरुआत बिनायक (गणेश) री पूजा-अर्चना अर गीत सूं करीजै। कवि रा बिनायक रै नांव सूं छह गीत लिख्योड़ा है, उण मांय सूं अेक बानगी इण भांत है :

रणथभंवर सूं पधारो
म्हारै ब्याह को काज संवारो
थांनै पैलीपोत मनावां गणपत
म्हारो कुळ उजियारो।

(पानो, 18)

राजस्थानी रिवाज मुजब बेटा-बेटी रै ब्यांव रै मौकै उणरी मां आपरै पीहर में भाई नैं ब्यांव में पधारणै सारू नूंतो देवण जावै अर बा आपरै भाई नैं भात नूंतै। इण भांत रा गीतां री अेक बानगी कवि रै गीत में :

थारी पोळ्यां में बीरा नौबत बाजै
रिध-सिध सागै गणपत बिराजै
बाई तो जामण जाई, थारोड़ै आंगण आई
घर बडभाग्यां ब्याही कनक-छड़ी।

गजानन वर्मा गीतकार ई नीं हा। उणां री दूजी केई रचनावां खासी ख्यातनांव हुयी। 'वीर अमरसिंह राठौड़' नांव रो कठपूतळी नाटक रो दिल्ली जिसी महानगरी मांय प्रदरसन हुयो। वांरी केई रचनावां अजै अणछपी है। वांरी मीरां (गीति नाटिका), हर्ष अर जीण (काव्य नाटक), डूंगजी-जवारजी (काव्य नाटक), ढोला-मारू (गीति नाटक) आद घणी ई पोथ्यां है। गजानन वर्मा री बाल पोथ्यां में—अेक हो झींटियो (बाल नाटक), चाल म्हारी डामकी डमाक डम (बाल नाटक)। आं पोथ्यां री अजै परख बाकी है। बै राजस्थानी रै अलावा हिंदी में भी आधी दरजन नैड़ी पोथ्यां केई विधावां मांय लिखी है।

 ISSN : 2320-0995

गजानन वर्मा रै समग्र साहित्य रो मूल्यांकन अजै तांई ईमानदारी सूं नीं हुयो। उणां री घणकरी रचनावां में गांव री हाजरी है। वर्मा री कविता में गांव रा ठेठ अनुभव है। वांरी केई कवितावां आज रै नेतावां माथै व्यंग्य अर आक्रोस है। बै किसान अर मजूर नैं सावचेत करै।

वर्मा रा गीतां में सामाजिक सरोकार अर बांरी प्रतिबद्धता साफ निजर आवै। कवि आधुनिकता री बजाय ठेठ गांवाई आधुनिकता आपरी रचनावां में दरसावै। वर्मा लोक जिंदगाणी में संघर्स आगै जोर कम दीठावै। लोकजीवण अर लोकसौंदर्य रा कवि गजानन वर्मा राजस्थानी गीत खेत्र में सदा अमर रैसी। राजस्थानी में काव्य आलोचना रो खेत्र घणो पिछड़्योड़ो है। ठाह नीं आखिर कद तांई आ सून रैसी। राजस्थानी पत्रिकावां भी इण माथै कम ध्यान देय रैयी है। जद कै योरोप में इयां नीं हुवै। बठै री पत्रिकावां कवियां री कवितावां छापै तो परख अर आलोचना माथै भी जरूर लिखै। गीत-संवेदना नैं गावण वाळा अर उणनैं जीवण वाळा कवि है गजानन वर्मा। छठै अर सातवैं दसक रो दौर गीतां रो दौर हो। उण समै गणेशीलाल व्यास, रामप्रसाद दाधीच, रेंवतदान चारण 'कल्पित', सत्यप्रकाश जोशी, मेघराज मुकुल जिसा कवियां रो जुग हो। आखै मुलक में आं गीतकारां री धूम ही। वर्मा अेक कानी संघर्स री कविता लिखता रैया, बठै ई दूजै कानी प्रेम रा गीत भी गाया है।

गजानन वर्मा जठै लूंठा कवि अर गीतकार हा, बठै उणां रै मन रै कूणै में कठैई पत्रकारिता रो मोह भी रैयो। बै आपरी जवानी रै दिनां में रतनगढ़ (चूरू) में रैय'र 'नवयुवक' नांव री हस्तलिखित पत्रिका संपादित कर'र गांव रै हनुमान पुस्तकालय नैं अरपी। आगै जाय'र बै बीकानेर सूं चम्पालाल रांका रै प्रबंध संपादन में निकळण वाळी 'नई चेतना' दुमाही पत्रिका रो संपादन कर्‌यो। 1947-48 में कलकत्तै रै साप्ताहिक 'जनपथ' में संयुक्त संपादक रैया।

गजानन वर्मा रै संपूर्ण साहित्य-लेखन रो लेखो-जोखो लेवां तो उणां रा गीत अर काव्य नाटक में बांनै जकी योग्यता हासल ही बा कम रचनाकारां में देखण नै मिलै। कवि वर्मा खेत-खळै अर लोक जिंदगाणी रा लूंठा अर जगचावा कवि हा। जदपि समकालीन आलोचक उणां नैं लोकगीत गायक कैवता ई नीं संकै। फेरूं भी उणां रा गीत सुण'र आपनैं लागसी कै कोई गांव में खड़्यो हुय'र अबखायां नैं ललकार रैयो है।

◆◆

जितेन्द्र निर्मोही

ग़ालिब

ग़ालिब म्हारा
इश्क बतावै
घणो ऊंडो छै
इश्क को दरियो
गेलो आडो-ऊलो
बळती लाय बतावै
ऊं सूं बारै जा'र खडो

गालिब म्हारा
ऊं सूं बारै खड आवै
जुल्फा का ये
पैचो कम छै
देखो न्याळा न्याळा
रात पड़्यां दारूड़ी झलकै
झलकै मद का प्याला
ग़ालिब गजलां नैं गावै
अरे लट नैं सुळझावै।

◆◆

बरहमी छै

आज वहां सूं
बरहमी* छै
अरे आंख्यां में
नमी छै
हेत होंडा पै छै
आई छै बारां
जुल्फां पै यारां
आ रही तरी छै
आंगणै में
आज म्हांकै
खळबळी छै
शबनमी रातां का
दिन छै
प्यार की सांसां का
दिन छै
हां संख्या छै वै
लाग री अब
बेहतरी छै।

◆◆

**बरहमी=नाराजगी, रूसबो*

ठिकाणो :
बी-422,
आर.के.पुरम, कोटा
(राज0) 324010
मो. 9413007724

ISSN : 2320-0995

भंवरलाल सुथार

बिरमा री पूतळी

बिरमा घड़ी दो पूतळी
इक नर अर दूजी नार
स्रस्टि रै पसराव सारू
पण नार री अबखायां
कद ओळखी करतार।

रिसी रो सराप
भाटो बणगी अहिल्या
अगन झाळ उलांघ नै ई
बिजोगण बणगी सीता
पांच रै पांती आई पांचाळी रो
चीर हरण हुयो भरी सभा भड़ां बैठां
गरळ गटकणो पड़ियो मीरां नै
तो सत रै पगोथियां चढगी सतियां
मरजाद मिनख री राखण।

कळजुग में बधगी कळप
बिरमा री आं पूतळियां नैं
दायजै दानव दबाय दी
तो कदैई ओळभां ऊरबा
कोरै काळजै डांभ ज्यूं लागा।
अधरमी अन्यायी राकसड़ा
उछरिया धरा पर अणमाप

ठिकाणो :
238, रामदेव नगर
डाळीबाई मिंदर रै साम्हीं
जोधपुर-342008
मो. 6376545732

जिका कद उधेड़ दै इणरो अस्तित्व
लोहीझाण करदै इणरी आतमा
देखां सुणां हां...
बाज री जाड़ फसी चिड़कली ज्यूं
अबोध आतमावां नैं
किच्चरघाण करदै दुस्टी।

डाकीचाळो बापरग्यो
जुग री जाजम माथै
ओपरी निजरां, ओपरा आखर
ओपरा लोगां री
कद भख बण जावै
स्यात ईसर ई नीं जाणै!

किणी री धीवड़ी
किणी री बैन
किणी रै काळजै री कोर
किणी री मां, किणी री बेटी
पीढियां पोखती आई
आ ईज नार जुगां जुग सूं
पण...
कुण रुखाळै, कुण पंपोळै
इणरै मांयलै मरम नैं
भख रा भूखा भेड़ियां आगै
हूगी आ निरजोर।

हमै...
ईसर सूं करती अरदास
इण भव बणाई तो बणाई
आगलै भव भलांई
कीड़ी कमेड़ी चिड़ी
कीं ई बणा दीजै
पण मत बणाइजै अैड़ी नार।

वोटां री उगाही

पांच बरस सत्ता सुख भोगतां
मखमली गदरां गलकां करिया
जनता री जाजम माथै जजमानी करण
पूगणौ ईज पड़ै।
बख आयां जनता नैं जंतरावता रैया
हमै याद आयो लोकतंत्र रो लोक
जिको काठो कायो हुयोड़ो
इणां री दूखती रग नैं रगड़
फेरूं वोटां री उगरावणी सरू।
गौरव जातरा रा जत्था जुतग्या
मिनखां नैं मुळक देवण
लागै गौरव कठै ई गुमग्यो
गुमेज भरी गाथावां गाईजैला
गौरव जातरावां में
अर वोटां री वारणी हुयां
पाछा पधारैला पांच बरस पछै।
दूजी कांनी संकल्प जातरा रा सूरमा ई
जुतग्या वोटां रै जुगाड़ में
पैला संकल्प रो संपाड़ो कर लेवता
जनता नैं जगावण री जरूत कठै
जनता तो जूण रा जंजाळां सूं जूझती
आछै री उम्मीदां में अजै उडीकै
आपरी सोरायां सारू।
पण कुण जनता, किणरी जनता
पांच बरस पछै पंपोळीजै इणरी पीड़
लोकतंत्र रो लोक तो अैड़ो लुकग्यो
जाणै लंका लूटीजगी।
अेकर फेरूं आस्वासनां रा ऊरबा ऊरनै
भरोसा रै भरम में भरमाय
वोटां री उगाही करण नै
उछरग्या है—जत्था रा जत्था।

◆◆

ISSN : 2320-0995

सतीश सम्यक

राजियो भांभी

इतिहासकारां इतिहास मांड्यो
पण बै मांड कोनी पाया
साची बात
बां करी—
राज सिंघासण री गुलामी।
आपां बीं गुलामी नैं बांच'र,
मूछयां रै बंट लगावां
करां हां—
कूड़ै इतिहास माथै गुमान।
जे इतिहासकार
साची बात मांडता तो
पकायत ईं मांड्यो जांवतो
राजियै भांभी रो इतिहास
क्यूं कै बण करी ही
ईं बेगार प्रथा रै खिलाफ
बगावत।
जदी तो बींनै
जींवतै नैं ई
दाब दियो
मेहराणगढ़ दुरग री नींव मांय।
पैलां रा इतिहासकार
गुलाम हा राजसिंघासण रा
पण, गुलाम तो आज रा
इतिहासकार ई है
पुरस्कार अर सत्ता रा।

ठिकाणो :
बड़बिराना, नोहर
(हनुमानगढ़) राज.
8000636617

कोटै रो पटवारी

जे थे ए.सी. रै आगै बैठ'र
घंटा अेक पोथी बांचो, तो
गांव में कुहाइजै—
छोरै री है चोखी भणाई।
म्हे चिमनी रै च्यानणै
आखी रात भणां
गांव रा मिनख कैव—
काम सूं डरतो बैठ्यो है।
थांरी फदू बातां नै
सईकां तांई भणाईजै।
म्हारी बात थांनै
कार्ल मार्क्स अर अंबेडकर सूं
करड़ी लागै।
म्हे तंगी मांयनै भणाई कर'र
जे बण जावां पटवारी
थारै मूंडे सूं निकळै—
औ तो है कोटै रो पटवारी।

क्रांति

थै कैवो
क्रांति आवैली,
म्हैं सदां ई पूछूं
कद आवैली ?
थै कैवो
जद सवाल करस्यो
बीं बगत आवैली।
म्हारै मूंडै सूं निकळै
कदी हिम्मत ई कोनी होवै
सवाल करण री।
थे कैवो—
क्यूं ?
जे म्हे सवाल करस्यां तो
देशद्रोही कुहास्यां
इब थे ई बताओ
देशद्रोहियां रै सारू
क्रांति आसी के ?

मुगती रो मारग

थांनै, आपरी बात नै
मनावण रै खातर
जरूरत पड़ै भगवान री।
भगवान रो डर दिखावतां ई
थांरी बात
बिना सोच समझ'र
मान जावै मिनख।
थे मोटा-मोटा
सिंघासणां माथै बैठ'र
झूठ ई कैयो—
मुगती रो मारग है
राम रो नांव।
अर म्हे
बिना सूझ-बूझ रै सागै
लाग्या लेवण राम रो नांव।
ओ नाम लेवतां
बीतगी कई पीढियां।
पण होई कोनी
अजै ई मुगती।
◆◆

ISSN : 2320-0995

महेंद्रसिंह सिसोदिया 'छायण'

प्रणधारी पाबू

बगत रै वायरै सूं झपीड़ीज
धुड़ग्या केई कोट
ढहग्या लख भाखर
वतूळौ बण उडग्या
कई थळिया-धोरा
बहगी केई बातां समै रै साथै
पण, अजैई कायम है थारी
कीरत
धांधल रा!

तैं चिणियो कीरत हंदौ कोट
विरली वीरत रै पाण
जकौ—
नह धुड़ सकै
नह ढह सकै
नह उड सकै
नह बह सकै
इण री नींव में भरयो तैं
प्रण रै परवाण
कौल निभावण सारू
त्याग अर बलिदान।

ठिकाणो :
गांव—छायण
तहसील-पोकरण
जिला-जैसलमेर
राजस्थान-345023
मो. 9587689188

भालाळा!
केई जलमिया
इण धरती री कूख
अेक-अेक सूं आगळा
जाहर जूंझार
हरवळ रा हकदार
पण थारो नाम
थारो काम
कित्ता ई कैताणां में अमर रैसी
गाईजसी इतिहास रै पानां
लोक रै कंठां।

धांधल रा!
तैं निभाई 'रघुकुळ आळी रीत'
जिणमें—
जीमीज्या हा सबरी आळा बोर
वांईज निभाई पाछी
राम री ओळ
भीलां रै साथै रैवतां।
दीधो—
समरसता रो संदेस।
सांवळा ई
कदैई लारै नीं रैया
भायां ज्यूं भेंट
बूवा विकट मारगां।

आस्थान हरा!
केलम रै सारूं
तूं लायो लंकाथळी री सांढियां
सूमरै रै दळ-बळ नैं चीर
तैं पायो पाणी सैंधव नैं
'लांबै' री डीगोड़ी पाळां ऊपरां ।

अपछर-सुतन!
पैहरी तैं पचरंगी पाग
केसरिये-बागां में सजियो
इधको बींद
धवळै धोरां में दूहा गूंजिया।
अमरांणै अणपार
हुयो हरख-वधाव
जन-जन रै 'हियै-समद'
उमंग री छौळां ऊमड़ी।
'केसर-काळमी' पर
करीजी थारै घोळ
निछरावळ कीनी थारै अणवरां।
सामेळे जुड़िया साचा सैण
सोढां इम रूप थारो पेखियो।

पण, कुण जाणै हो बेमाता रा लेख?
कुण जाणै हो विधना आळो साच?
जको चावै हो
कीरत रै आकास
अेक इतियासू वृत्तांत।

बांमण उच्चारण लागो हो मंत्र
सोढी झींणै घूंघट ओट
आधी पलकां मूंद
निरख्यो हो थारो उणियारो
चंवरी री प्रजळती अगन में
सैचन्नण सैंरूप।

भुरजाळा!
तूं फेरां रै अधबीच
चंवरी में कंवरी नैं छोड
चढियो भंवरी री पीठ।

ISSN : 2320-0995

झुरता रैयग्या सायधण रा नैण
सासू-सुसरै रो गळ रुंधीज्यो
पण, कौल निभावण काज
रंगभीनी रातां छोड़
रसभीनोड़ा पल त्याग
जुद्ध में मांड्यो मोरचो।

मुरधर-मुगट!
तैं खड़काई रण में खाग
गायां री वाहर हरवळ ऊभियो
थारै साथ—
कांधै सूं कांधौ मिला'र
भल सुभट भीलां
तांण्यां तणकां तीर-कबाण
चंदो-डेमो
रणखेतां होळी खेलिया।

प्रणधारी पाबू!
परण छोड़
मरण रो वरण करण सारू
तैं भळकायो भालो
समहर-भौम
वाढाळी थारी चमकी ओथ
मझ भादरवै मांय
जाणै कड़की ही आभै बीजळी।
अरि-निकर रै बीच
काळमी हींसी प्रसण-मूंडां ऊपरां
खळ-दळ री छाती बींध
भालै कईयक गाबड़ चीरिया।
सैवट
घणघोर घमसाण बिचाळै
भरीजी रातंबर मांग
रण-सेजां पर तूं जाय'र पोढियो।

मिणधारी!
ब्यांव री केसरिया पाग साथ
जस रो सैहरो तैं बांधियो
छत्रवट री राखी ही आण
माण-मरजादा पोखी प्रघळी
वचनां री राखी तैं लाज
रजवट नै हरियल राखियो।

अै गाईजै थारा
मगरां अर डीगौड़ै डूंगरां
थळियां-धोरां ऊपरां
गीरबैजोगा गीत
भोपां री हुंकारां साथै
रावणहत्था रै माथ
पड़ बांचीजै अजै ऊजळी।

◆◆

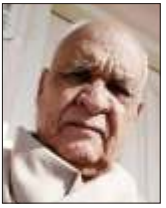

गौरीशंकर 'भावुक'

दूध-दही नैं चाय चाटगी

दूध दही नैं चाय चाटगी, फूट चाटगी भायां नैं
इंटरनेट डाक नैं चरगी, भैंस्यां चरगी गायां नैं
बैद स्याणा नैं डाक्टर चरग्या, नरसां चरगी दायां नैं
टेलीफून मोबाइल चरग्या, सगळा लोग-लुगायां नैं

साड़ी नैं सलवारां खागी, धोती नैं पतलून खायगी
धरमसाळ नैं होटल खाग्या, नायां नैं सैलून खायगी
ऑफिस नैं कंप्यूटर खाग्या, घर नैं घर की सून खायगी
राम रमी नैं 'हैलो' खागी, बात करण की टून खायगी

का'णी-किस्सा फिल्मां खागी, 'सीडी' खागी गाणै नैं
टेलीविजन सब नैं खाग्यो, गाणै और बजाणै नैं
गोबर खाद यूरिया खागी, गैस खायगी छाणै नैं
पुरसगारा नैं वेटर खाग्या, 'बफ्फे' खागी खाणै नैं

चिलम तमाखू हुक्को खागी, जरदो खाग्यो बीड़ी नैं
बच्या-खुच्यां नैं पुड़िया खाग्या, पकड़ मौत की सीढी नैं
राजनीति घर-घर नैं खागी, भीड़ी खाग्यो भीड़ी नैं
कोई चीज मिलै ना सागी, हाथी खाग्यो कीड़ी नैं

हिंदी नैं अंग्रेजी खागी, भरग्या भ्रस्ट ठिकाणै में
नदी नीर नैं कचरो खाग्यो, रेत गई रेठाणै में
धरती नैं धिंगाण्या खाग्या, पुलिस खायगी थाणै में
दिल्ली में झाड़ू सी फिरगी, सार नहीं समझाणै में

ठिकाणो :
19 E, Rainbow Siddhachal
Tower-B, No. 1,
Demellows Road,
Choolai, CHENNAI
Tamilnadu 600012
Mo. 9928787125

ISSN : 2320-0995

गांव-गांव में पाणा मंडग्या, आपसरी की राड़ खायगी
बाग बगीचा माळी खाग्या, भरै खेत नैं बाड़ खायगी
कुणसूं कुणरी बात करां आ दुखती रग री नाड़ खायगी
नीत बिना रै नेतावां नैं कुर्सी कपड़ा फाड़ खायगी

मजदूरां नैं दारू खागी, करजो खेत किसानां नैं
खुरड़-खुरड़ महंगाई खागी, आलू मिर्ची कानां नैं
गोरमिंट चौआनी खागी, मोटा माल दुकानां नैं
डाकण बणकर डॉलर खागी, बाकी बारह आनां नैं

फुटपाथां नैं सड़क खायगी, शहर खायग्यो गांवां नैं
लव मैरिज सगळां ही खागी, शादी ब्यांव उछावां नैं
अहंकार अपणायत खागी, बेटा खाग्या मावां नैं
भावुक बन कविताई खागी, 'भावुक' थारा भावां नैं

◆◆

बिमल काका गोलछा 'हँसमुख'

बालपणै री बातां

टाबरपणा रो बो के जमानो हो
कदैई रूसणो, कदैई मनाणो हो
पेट दुखणै रो कैय देंवता घरां
पढण ना जाणै रो बहानो हो

भायलां सागै गळियां रुळता
अळबाद कर ही पग आगै धरता
सारो गांव ई कुणा सूं भी कुणा
कुचमाद पर कुचमाद ही करता

आळमो बापू कनै जिको करयो
समझो माथो ऊंखळी में धरयो
गत बींकी राम ही कोनी जाणतो
बापू नैं छोड किंवुं कोनी डरयो

भायलां री झूठी हामळ भरवातो
अपणै आप नैं सांचो बतळातो
सामलै री छोरी चिकिया कढाई
बा सगळी बींरी गळती बतातो

बाजार सूं गुड़ लावणै रो कयो
कदई लुपरियो ही कोनी चखायो
जद म्हैं सामान लावण नै नटग्यो
जणै ओ कूड़ो ओळमो बणायो

ठिकाणो :
मांगीलाल बिमलचंद गोलछा, आडसर बास
वार्ड नं. 26
श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
राजस्थान 331803
मो. 9401643643

ISSN : 2320-0995

बातां बणा'र बापू नैं भरमावतो
पाछो तीर बापू कनै सूं छुड़वावतो
हँसमुख स्यो औ छोरो है म्हारो
समान मंगा'र के नौकर बणावतो ?

अबकी तो झूठो ओळमो लायो है
छोरै नैं बिना मतलब फंसायो है
बापू री दाकल री फटकार सुण
ओळमो लावणियो पछतायो है

और ओळमो ल्याणो भूल जावतो
हाथाजोड़ी कर म्हांनै राजी राखतो
बेटा तूं स्याणो है घर रो टाबर है
जियां जींवता पित्तर ही मनावतो।

◆◆

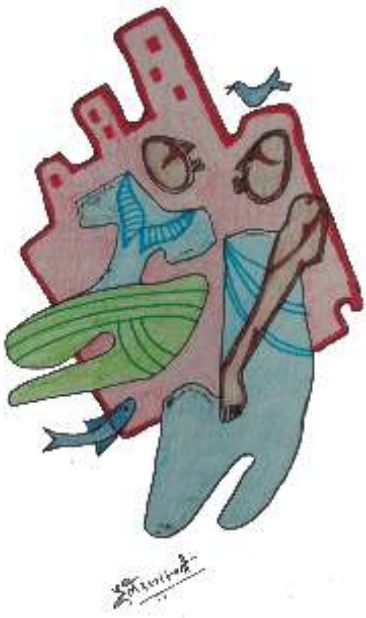

मानसिंह शेखावत 'मऊ'

भाया, गूढ ग्यान मत दीजै!

दुनियां मन मरजी सूं चालै, तूं है क्यां'टै छीजै
मा जायो जद फोड़ा घालै, बळत भाव में सीजै
भाया, गूढ ग्यान मत दीजै!

भाई ह्वै भाटां ज्यूं भारी, काड्यां बैर पतीजै
थारी है कांई लाचारी, उडतो तीर न लीजै
भाया, गूढ ग्यान मत दीजै!

न्याव बिकै है चोड़ै धाड़ै, भोळा मिनख लुटीजै
मां-बेटी तो मूंडो फाड़ै, बेटा-बहू कुटीजै
भाया, गूढ ग्यान मत दीजै!

मालिक मार मांयली मारै, अै मन मांही खीजै
नहीं भरोसो छींया माळै, नीं कोई नैं धीजै
भाया, गूढ ग्यान मत दीजै!

बाट राख मतलब का सारा, गरळ घूंट ही पीजै
झूंठा बांध जसां रा भारा, हां जी हां जी कीजै
भाया, गूढ ग्यान मत दीजै!

सगळो सांग दिखावै थोथो, तूं क्यां माळै रीझै
क्यां'टै बाजै मूसळ मोथो,अड़क बीज क्यूं बीजै
भाया, गूढ ग्यान मत दीजै!

करबो खेचळ कोनी चावै, खंदाखोळ करीजै
खांडखोपरा सब नैं भावै, मेळा रोज भरीजै
भाया, गूढ ग्यान मत दीजै!

ठिकाणो :
मु.पो.-मऊ
वाया-श्रीमाधोपुर
जिला-सीकर
राजस्थान 332715
मो.9829164164

ISSN : 2320-0995

बता बीनणी के बोलै !

तकतूळी सो बींद बिराजै,
उडै बायरै कै झोलै!
हाथ लगातां माथै आवै,
बता बीनणी के बोलै!

जाड़ दबायां जरदो-गुटको,
आतां ही बोतल खोलै
थूंक-थूंक कै भरै गूदड़ा,
बता बीनणी के बोलै!

ऊठ सुंवारै अजब ओळमा,
मूंडा सूं फूड़ो बोलै
करतब ईं का कंस सरीखा,
बता बीनणी के बोलै!

जे बतळा ले पाड़ोसण सूं,
नणदूली छाती छोलै
ओठ्याणां सूं ना ऊठण दे,
बता बीनणी के बोलै!

सासू काढै ओछी गाळ्यां,
सुसरो जी पूरो तोलै
मांग करै नत नूंवी-नूंवी,
बता बीनणी के बोलै!

बाजोटां पै जान जुहारी,
पढै पानड़ी अर खोलै
बां को पेट भरै ना फेरूं,
बता बीनणी के बोलै!

राज लुगायां को बतळावै,
पण या तो मूं ना खोलै
आ अणहूती पढी बाजगी,
बता बीनणी के बोलै!

जे बिसवास नहीं होवै तो,
आ म्हारै सागै हो लै!
बेटी खाय बहूड़ी तरसै,
बता बीनणी के बोलै!!

मोहनसिंह रतनू

कोरोना ठिठकारिया

कोरोना ठिठकारिया, (थारो) नरवंश ज्याजो नाश।
सगा संबंधी सैकड़ां, (पण) इक नीं आवै पास।।
कोरोना सू संक्रमित, अर आदत सूं मजबूर।
मोहन कहै बी मिनख सूं, दो गज रहजो दूर।।
मुख ऊपर बिन मास्क के, फिरै दिखाता फेस।
मोहन कहै बी मिनख नै, अळगा सूं आदेस।।
जहां, तहां जळसा हुवै, भारी भरकम भीड़।
मोहन तहां पर जायके, लैणो नहीं गबीड़।।
कोरोना जासी कदे, बैठां जोवो बाट।
सुण लीजै रे सांवरा, आ म्हाकी अरड़ाट।।
पृथ्वी ऊपर पसरियो, कोरोना रो कोप।
अंबा कष्ट उबारसी, है मन में दृढ होप।।
डेंगू, अबोला, दुसट, कोरोना विष कीट।
मां करनी री महर सूं, अळगा जाय अदीठ।।
घन गरजै, बरसै घटा, बीजळ खिंवै अकास।
कोरोना विष घोळियो, (म्हारै) मुधरै सावण मास।।
सावण आयो हे सखी, पीव नीं आया पास।
करी कोरोना किरकिरी, (म्हारै) मुधरै हरियळ मास।।
भादरवै मैळो भरे, बाबै रै दरबार।
कोरोना रै कारणै, पड़ी न अबकी पार।।
आप हमारे पूज्य हो, आप हमारे खास।
कोरोना रै कारणे, रै आजो मत पास।।
कोरोना भीषण कहर, बिनवूं बारम्बार।
छह फिट छेटी राखणी, ओ इज बस उपचार।।

◆◆

ठिकाणो :
मकान नं. 84 गली नं. 2
मां भगवती नगर
बाल समंद रोड, जोधपुर
मो. 9460819909

ISSN : 2320-0995

निर्मला राठौड़

सायब थांरी याद में...

चांदा थारै चानणै, उडीक है भरतार।
मन रो मीत मिलाय दे, घणी करूं मनवार।।1।।

ओळूं आवै सायबा, तक तक थाका नैण।
पंथ निहारूं आपरो, बीतै नाही रैण।।2।।

नैण झुकाया सायधण, मुख्ख उदासी छाय।
पिया बसै परदेस में, ओळूं घणी सताय।।3।।

सेजां बिलखै गोरड़ी, सजन सिधाया वार।
आन बचावण देस री, फरज निभायो जा'र।।4।।

सज-धज बैठी गोरड़ी, कर सोळा सिणगार।
कद आवोला सायबा, जोड़ी रा भरतार।।5।।

कुरजां आयी पांवणी, मुरधर म्हारै देस।
सोन चिड़कळी सोवणी, पिव नै दे संदेस ।।6।।

गजरा हाथां सोवणा, चुड़लै रो सिणगार।
बैठ उडीकै गोरड़ी, कमधजिया भरतार।।7।।

सर पर मेड़ी सोवणी, टीको पळकादार ।
रंग कसूमळ ओढणो , चुड़लो भळकादार ।।8।।

कंदोरौ कड़ियां रमै, लड़ियां झालरदार।
हाथां में हथफूल है, पुणचा रो सिणगार।।9।।

सोजत मैंदी मोलवूं, हरख हियै में लाय।
हीना लागी राचणै, रंग घणो निखराय।।10।।

ठिकाणो :
पदम-निवास
पावटा बी रोड
जोधपुर
राजस्थान 342001

ऊभी निरखै गोरड़ी, सज सोळै सिणगार।
कद आसी मम बालमो, राठौड़ी सिरदार।।11।।

लुक-छिप बैठी धीवड़ी, फोन लियो है हाथ।
संदेसा भल बांचिया, पिव रो मिळसी साथ।।12।।

मोती मूंगै मोल रा, मिळिया माटी मांय।
खोजत खोजत धण थकी, पाछा मिळिया नांय ।।13।।

गाव दुहाडूं गोरड़ी, गुदळी रांधूं खीर।
पिव आवै परदेसियो, हरलै हिरदै पीर।।14।।

ऊमण दूमण गोरड़ी, केस रयी सुळझाय।
सावण में पिव पास नीं, उळझण निकळै नाय।।15।।

सायब थांरी याद में, हिवड़ो घणो उदास।
नैणां झरतो नीरड़ो, हियै बुझै नह प्यास।।16।।

बाबोसा री धीवड़ी, ऊभी पोळ उमाय।
पिव आवै जे पांवणा, लेवूं मांय बधाय।।17।।

ठाडो चालै बायरो, तारां छायी रात।
बैठी बिलखै गोरड़ी, पिव री जोवै बाट।।18।।

घर घर घरटी घूमती, परभातै री पौर।
पैली उठती गोरड़ी, पाछै हूती भोर।।19।।

गेह आई गवारणी, गोरी मन ललचाय।
पिव आवण री आस में, मुठियो रयी मुलाय।।20।।

सिर पर रखड़ी सोवणी, गळै नवलखो हार।
पग में पायल बाजणी, झांझर री झणकार।।21।।

◆◆

राजस्थली लेन-देन सारु :
खाता नांव : RAJASTHALI
बैंक : बैंक ऑफ इंडिया, श्रीडूँगरगढ़
खाता सं. : 746210110001995
IFSC : BKID 0007462

ISSN : 2320-0995

वीरेन्द्र लखावत

अेक

रैवणो घर में पड़ैला आ कदै जाणी बता?
मानखो इण गत मरैला आ कदै जाणी बता?
अेक दूजा सूं गळै न मिल सकां न छू सकां,
हाथ मिलतां ई डरैला आ कदै जाणी बता?
आपरो ई आपरै घर आवतां दुसमी लगै,
आवतां घर गड़बड़ैला आ कदै जाणी बता?
घर में रै'तां आंतरो गज दोय रो रखणो पड़ै,
मास्क बिन घर नीं तजैला आ कदै जाणी बता?
थटाथट बाजार सजिया रैवता हा सास्ता,
उठै सन्नाटा छवैला आ कदै जाणी बता?
भरतार नै घर बुलावण नै उडाती धण काग ही,
आज वै यूं रड़वड़ैला आ कदै जाणी बता?
विपत में मंदिर नै मस्जिद जावणो दुर्लभ हुयो,
उठै ई ताळा जड़ैला आ कदै जाणी बता?
मौत मरतंग री वळा तो मानखो नीं मावतो,
दस मिनख सूं दाग व्हैला आ कदै जाणी बता?

दो

कूकता कुरळावता रै'जो भलां जन आज रा
आपनै नीं मिल सकैला फायदा सुकाज रा
अै फिरै अड़ड़ावता मचकावता भल मलफता,
पण कठै पूरा करै वादा कियोड़ै काज रा

ठिकाणो :
करनी नगर (पूर्व)
हायर सैकंडरी मार्ग,
सोजत सिटी
जिला-पाली (राज.)
मो. 9460690534

तुरत करदै भीड़ भेळी गांव री इण जोस में,
जद कदै मिल जाय मौका पांवणा व्है ताज रा
राग में एक राग भेळै अर उंढेळै हेत नैं,
काम रा नीं काज रा पण सुर मिलावै साज रा
पकड़ियां पद पलटणै रा पांवडा जाणै घणा,
अर गिनर नीं करै अलबत आपरी आवाज रा
औ अडोळो दरख इणरै ढिग कियां बैठां भलां,
नीं है इणरै पात डाळी फगत अै है गाज रा
अै है सूई आप डोरो गूदड़ी में फंसावण,
सुई बारै आय खेलै डाव किसड़ा राज रा
पांच वर रा पीर पक्का और नीं घरबार रा,
बगत आवै बोट रा जद गीत गावै नाज रा

तीन

दियो जतरो पाण रा हकदार सगळा
क्यूं करो ऊंची पछै तलवार सगळा
अबै पसवाड़ो पवन ई फेर लीधो,
अलफता हय पर हुआ असवार सगळा
रीत रो कर रायतो रंग जमावण नै,
भिड़ रया बिन सीस बै झुंझार सगळा
पीड़ री परनाळ में पकिया पनपिया,
भीड़ रा इज भाग बण की पार सगळा
जूण रा जंजाळ नै जो जाणियो है,
पूण कै आधी-अधूरी तार सगळा
अनिताई नै अजै तक अंगेजी ही,
आज वै बणगा अठै खूंखार सगळा
करम तो हा फूटिया कदै सूं ई,
लूटिया इब आयनै दमदार सगळा
बगत री इण कुचरणी नै बाथ में लै,
बाळियो हो डील सौ-सौ वार सगळा

◆◆

ISSN : 2320-0995

छगनलाल व्यास

अरज

जीभ दांतां सूं कैवती, ''म्हारा लाडला भाइयां! म्हैं थांरी अेकाअेक बैन। थांरो प्रेम देखणजोग। नित कोई चीज हुवै थे तोड़नै ई देवो औ जाण'र कै बैन नैं तकलीफ नीं हुवै। म्हैं उणनैं चाखतां ई पतो लगायलूं कै वा खारी, कड़वी कै खाटी कै फीकी थूक। अैड़ी हुवतां तुरंत बिचारै गळै रै हवालै कै मूंडै सूं बारै।''

भाई खुद री बैन री बातां माथै फूल'र कूप्पो हुवतां कैयो, ''औ तो म्हांरो फरज बणै कै म्हे जीवता हां उठै तांई बैन नैं हिलको ई नीं आवै। इणी कारण थांरो पूरो ध्यान राखां। नित आ सोचनै कै कोई खराब चीज बैन तांई नीं पूगै, पण भूलवश पूगै अर आपरो मूड खराब देखतां कान पकड़तां उणनैं जमीं भेळो कर ई सांस लेवां।''

दांत आगै कैवता, ''बैन थारो औ अपणायत कै कोई म्हांरै बीचै आय'र फंसै तो थूं उणां रै लारै लाग बार-बार उणनैं घोदावै जद तांई वो भाइयां बिचै सूं काळो मूंडो नीं करै। यूं तो आप उमर में म्हारा सूं मोटा, पण अेक अरज!

जीभ अचुंभै सूं पूछ्यो, ''कांई?''

सगळा दांत भेळा हुयर बोल्या, ''आप जद ई बारै पधारो, म्हांरो काळजो धड़कण लागै कै कठैई ऊंधो बोल आयो तो लेणै रा देणा पड़ जावैला। इणी कारण मैरबानी करनै किणी नैं खराब बोल मत बोल आइजो। नीतर कोई माथा माथै रो मिल्यो तो हाड भांगण री धमकी साथै ललकारैला। पछै दांत तोड़ हाथ में देयनै जीभ खींच लेवूंला। उण बगत म्हे तो जीवता ई मरग्या बराबर।''

जीभ दांतां लारै जायनै विचारां में बैठी।

◆◆

ठिकाणो :
गांव-खांडप
वाया-मोकळसर
बाड़मेर 344043
मो. 9462083220

पीड़

कदैई भीड़ भाड़ वाळै प्लेटफार्म माथै आज साव सूनयाप छायोड़ी। अेकाध जात्री अर वै ई भींन्योड़ी मिनकी रै ज्यूं चुपचाप! अेक-दूजै सूं गज-गज आघा क्यूं कै गाडियां ई इक्की-दुक्की! वै ई हफ्तैवाळी कै स्पेशल रै नांव सूं जिको रुकी अर नीं रुकी अर वा जावै-वा जावै। जद प्लेटफार्म माथै कुण आवै? इण ऊपरां सेकड़ूं कागजी झंझट?

सूनै पड़्यै प्लेटफार्म माथै घूमतां-घूमतां लारलै प्लेटफार्म पूग्या तो साधारण रेल गाडी रा डिब्बा कुंभकर्णी ऊंघ सोवै!

खूब पग बजायां नीठ कर आंख्यां खोल पूछण लागा—थे कुण! लंबे बगत सूं पड़्या अठै माछरां, खटमलां साथै कीड़ा-मकोड़ां घर कर लीना है। दो-च्यार कुतियां अठै ई ब्याई है। अलेखूं पंखेरू दाणो लियां दिन-रात डेरा जमा लिया है। धूड़ अर कम्पी तो बेंत-बेंत जमगी! जद सोचण सारू मजबूर कै कैड़ो स्वच्छता अभियान!

थोड़ो विस्वास हुयां डिब्बा कानी देख्यो तो उणनै ई विश्वास हुयो कै शायद कोई खोज-खबर लेवण आयो है! होय सकै खबरनवीस हुवै अर आपणी पीड़ उजागर करै। होय सकै कोई पुराणो जात्री पगां-पगां आयो हुवै।

आंख्यां फाड़्योड़ै डिब्बा नैं सांत्वना अर परिचै देंवतां कैयो, ''म्हें साधारण सवारी गाड़ी रो जात्री। खूब वगत सूं नीं आया, इण सारू आपरी खोज खबर में निकळ्यो अर अठै पूग्यो। कैवो, कांई नाराजगी है म्हांरे सूं? म्हारै गांव आयां बरस बीतण नै आयो! कांई भूलग्या? कै कोई गलती हुई जिकण सूं मूंडो नीं कर रह्या हो? इता नाराज कै ठेठ आखरी प्लेटफार्म माथै! ताकि कोई नीं देखै! कांई आ ई बात है?''

डिब्बां नैं जाणै कोई मीत मिल्यो। पीड़ा सुणण वाळो। वै सगळा साथै बोलण लागा, ''जात्री! म्हे खुद औ ईज सोच रैयां हां कै म्हांनै कुणसै पाप री सजा मिल रही है? आज मिनखां में मूंडो दिखावण जोग नीं! अेकण कानी लायनै पटक दीना। वै दिन याद करयां रोवणो आवै। जद म्हांरै घड़ीभर बिसराम नीं हुवतो। आज अठै तो कालै कठै! हर गांव, ढाणी माथै जात्री उडीकता। म्हारे प्रेम ने देखतां वै शौचालय तांई बैठ जावता। चाय, कॉफी, आइसक्रीम, पॉपकॉन साथै चणा अर नीं जाणै कांई-कांई बेचण वाळा! गावण-बजावण साथै सफाई वाळां रो खास ठीकाणो। भिखारी ई म्हांनै पसंद करता। घंटां तांई किणी स्टेशन माथै रुक्यां काया नीं हुवता। जद मेल कै अेक्सप्रेस आवती देखनै उण सारू बाको फाड़ ऊभा रेवता। सबां नैं ले जावणो, सस्ती अर सुंदर जात्रा कैवत म्हारां माथै ई। फगत प्रेम रो पाठ, जलम साथै सीख्यो। पण आज? आज कोई नीं पूछै। हाथ-हाथ धूड़ो जमग्यो। नित सिनान, सफाई री आदत उडण-छू हुयगी। शौचालय में पाणी रो टीपो ई नीं! काच अर खिड़की रा शौकीन टाबर अर डोकरा! दरवाजै रै कनै बैठ्यै जात्री नैं आघा

 ISSN : 2320-0995

कर चढता जात्री! जगै-जगै उतरता-चढता वेंडर। सगळा नैं याद करतां रोवणो आवै। औ सोचनै कै किण री निजर लागगी, आज लुक-छिपनै पिछतावो करणो पड़ै।''

जात्री थावस बंधावतो बोल्यो, ''वो कोरोना काळ, जिकण सूं थूं बचग्यो अर म्हांने बचावण में थूं मददगार हुयो, इण बाबत थारो मोकळो अैसान! धीरै-धीरै सगळो सामान्य हुय रह्यो है। ईश्वर सूं आ ईज प्रार्थना है कै जल्द ई वो बगत पाछो आवै अर थूं दौड़्यो दौड़्यो गांव-ढाणी में सीटी बजावतो धमचक करतो आवै। थनै रात दिन उडीकां।''

डिब्बा बोल्या, ''म्हे ई सोचां कै मिनखां बीचाळै जावां, क्यूं कै रात-दिन मिनखां बीचाळै रैवता, इण खातर मिनख सिवाय अेक पल आछो नीं लागै। म्हे तो औ ई जाणता कै सगळां रा आछा दिन आवैला तो म्हारा ई क्यूं नीं आवैला! बारै लाग्योड़ी दो लेणां सूं अेक लेण पैली री भांत फेरूं रातोरात नदारद हुय पैलो दरजो मिलैला, पण विधि नै कांई ओरुं ई मंजूर!''

जात्री फेरूं थावस बंधवायो अर कैयो, ''थारी अर म्हारी पीड़ अेक जैड़ी। जिकण रै नीं फटी बिवाई, वो कांई जाणै पीर परायी!''

जात्री जावतो डिब्बा लगोलग देखता।

◆◆

प्रेम

अचाणचक पग रै कांटो लाग्यो। दूजोडो पग तुरंत रुक्यो अर पूछ्यो, ''कांई हुयो?'' पैलो पग आपरी पीड़ बतावतो इणी बगत आंख्यां देखण लागी, हाथ कनै जाय'र निकाळण सारू आखता हुवण लागा। बठीनै दिमाग तरकीब खोजण लागो।

आखर दिमाग री देख-रेख में हाथ कारज करण लागा तो आंख्यां टकटकी लगाय लगोलग देखती झपकणो ई भूलगी। आखिर कांटै नैं निकळणो पड़्यो। पग रै जीव में जीव आयो, वो धीरै-धीरै चालण लाग्यो तो दूजोड़ो ई बरोबरी में चालतो। औ प्रेम देखनै बटाऊ दांतां आंगळी देंवतो औ सोचण लाग्यो कै औ कैड़ो प्रेम? काश! औ प्रेम मानखै में उपजै!

शरीर रा अंगां साथै हुयनै कह्यो, ''म्हे सदीव इणी भांत अेक-दूजै सारू पगां ऊभा रैवतां मदद करां जद तांई दरद उडण छू नीं हुवै।''

मानखो बखाण करतां मारग पकड़्यो। वो प्रेम नैं हियै नीं उतार सक्यो। औ सोचनै कै दुनिया में ग्यान देवण वाळा अणूता है, लेवण वाळा लाखां में अेकाध।

◆◆

व्यास योगेश 'राजस्थानी'

इचरज री बात

दिसंबर रो भयंकर सियाळो। रजाई सूं हाथ ई बारै नीं निकळै। तिण माथै अंधारघोर इत्तो कै साम्हीं खड़्यो मिनख ई निगै नीं आवै। घड़ी मांय बारह बजण रो घंटो बाजण ई आळो हो जित्तैक भोळू उठ्यो अर घर सूं बारै निकळ'र चालण लाग्यो। नदी रै पसवाड़े री टूटोड़ी सड़क माथै दोरो-सोरो चालतो-चालतो अैड़ी ठौड़ जा पूग्यो जठै न तो कोई जिनावर दीसै, न ई कोई मिनख री जात। घर रै कळेस सूं दुखी हुयोड़ो भोळू बठै अेक पट्टी देखनै बैठग्यो। बैठ्यै-बैठ्यै आंख लागण वाळी ई ही कै बीं नैं कोई हेलो पाड़्यो, "सुणो तो... ओ भाईसाहब! सुणो तो..." भोळू उठ्यो अर साम्हीं ऊभ्यै मिनख कनै जा पूग्यो।, "बोलो सा, इयां कियां गळो फाड़ो हो?" बो बोल्यो, "म्हैं अठै आयो अर फंसग्यो, थे म्हारै घरवाळां तक म्हारो अेक सनेसो पुगा देस्यो कांई...?" भोळू बोल्यो, "जरूर सा, आदेस करो।" बो आदमी आपरै घर रो पतो बतावतां थकां कैयो कै आप खाली म्हारै घरै जाय'र इत्तो कैय दिया कै रामलाल नै आवण में हाल थोड़ो बगत और लागैला। भोळू रामलाल नैं हुंकारो भर'र घरै आय'र पाछो सोयग्यो। दिनूगै उठतां ई बो रामलाल रै बतायोड़ै पतै माथै जा पूग्यो। बठै ब्राह्मण भोज चलै हो...। भोळू किंवाड़ खड़कायो, "कोई है...? कोई ई कांई?" अेक डोकरो आदमी जिणरै मूंडै माथै झुरियां पड़्योड़ी ही। हाथ में लकड़ी लियां किंवाड़ माथै आयो अर कैयो, "आव बेटा, मांयनै आय जा।" इयां कैवतो-कैवतो बो मांय जावण लाग्यो अर भोळू ई उणरै लारै लारै गयो। भोळू नैं बैठाय'र पैली नास्तो-पाणी करायो। बठै चालतै ब्राह्मण-भोज रो कारण सोच'र हाल भोळू मांय सूं सूनो ई पड़्यो हो। अबै भोळू आप माथै और

ठिकाणो :
**नृसिंह मंदिर के पीछे,
डागा चौक, बीकानेर
(राज.)334001**
मो. 8302242401

 ISSN : 2320-0995

आंकस नीं राख सक्यो अर पूछ्यो, ''बाऊजी, औ ब्राह्मण-भोज किण कारण कर रैया हो?''

भोळूं रै पूछतां ई डोकरै रो माथो नीचै हुयग्यो अर आंख्यां में पाणी आयग्यो। बूढी आंख्यां सूं पाणी पूंछतो बोल्यो, ''बेटा आज म्हारै बेटे री छठी बरसी है।''

''बेटै री!'' भोळू इचरज में पड़ग्यो अर हड़बड़ी में पाछो पूछ्यो, ''कांई नांव हो बाऊजी आपरै बेटै रो?''

बाऊजी दुखी आवाज में बोल्या, ''रामलाल।''

◆◆

म्हाराज री उदासी

आज बेला म्हाराज दिनूगै सूं ई अणूता राजी हो रैया हा। न्हा-धोय'र दुकान पूग्या अर दुकान रै साम्हीं पड़्यो अखबार उठा'र बांचण लाग्या। फटा-फट पन्ना फिरोळ्या अर अखबार फेंक दियो। अखबार रै साथै ई म्हाराज रो मूंडो भी उतरग्यो। बै घणै दुखी मन सूं दुकान तो खोली, पण नीं झाड़ा-झड़कावा, नीं कोई धूप-अगरबत्ती, बस दुकान खोल'र चेला नैं उडीकण लाग्या। साथै-साथै अखबार कानी देखै अर उणां नै चंडाळी चढै। थोड़ीक देर मांय धीरै-धीरै चेला भेळा हुवण लाग्या। सगळा चेला अेक-बीजै नैं पूछै हा, ''गुरु म्हाराज आज उदास कियां है? आज सूं पैली तो म्हाराज नै कदैई उदास नीं देख्या?'' बै सगळा आपस में खाली खुसर-पुसर करै हा, पण म्हाराज सूं पूछण री कोई री हिम्मत नीं पड़ै ही। इत्ती ताळ में अेक वकील साब दुकान में आया अर बेला म्हाराज री कुरसी कनै बैठग्या। वकील साब नैं देखतां ई चेला डरग्या। वकील साब बेला म्हाराज नैं पूछ्यो, ''कांई बात हुयगी, आज म्हारी जरूरत कियां पड़गी?'' चेला ई सोच्यो—अबै तो आपां नैं भी ठाह पड़ जासी कै म्हाराज किण कारण उदास है। बेला म्हाराज आपरै दुख री गाथा सुणावण लाग्या। महाराज बतायो कै म्हैं परसूं अेक जळसै में घणो त्यारी कर'र गयो। लंबो-चोड़ो भासण भी दियो, पण अगलै दिन रै अखबार में कोई न्यूज नीं ही। जद म्हैं संस्था रै पदाधिकारियां नैं फोन मिलायो अर प्रेस विज्ञप्ति रो पूछ्यो तो ठाह पड़ी कै काल मोड़ो होवण रै कारण न्यूज नीं लागी, काल रै अखबार में लगासी। म्हैं भी सोच्यो कै आ तो सुभाविक बात है, पण आज म्हैं दिनूगै अखबार देख्यो तो न्यूज तो ही, पण म्हारो नांव कोनी हो। म्हैं फेरूं संस्था में फोन कर'र पूछ्यो तो बै बतायो कै संस्था री विज्ञप्ति में तो सगळा रा नांव दिया है। आ बात कैय'र बां तो आपरो पल्लो झाड़ लियो। म्हारो नांव आज सूं पैली भी अखबार वाळा पांच-सात बार काट चुक्या है। म्हनैं अखबार वाळां माथै मान-हानि रो दावो करणो है।'' आ बात सुणतां ई वकील साब माथै तईड़ो लियो अर हंसता-हंसता दुकान सूं निकळ'र टुर ब्हीर हुया।

◆◆

संजय पुरोहित

फेक जुग

सतयुग सूं त्रेता हुवतां अर द्वापर नै पार करतां कळजुग आयो। बडा-बडेरा कैया करै कै सतजुग मांय धरम चार पगां खड़्यो हुया करै हो। उण बगत पाप रो नांव-निसाण नीं हो। मिनख मन्नत मांगतो अर पूरी हुय जावती। पण इचरज री बात कै मिनख धन-दौलत नीं मांगतो। वो कामना करतो ग्यान री। ध्यान री। तप री। फेर आयो त्रेता जुग। ईं जुग मांय धरम तीन पगां आयग्यो। तप रो ईं जुग मांय जबरो महातम। लोग करम करता अर फल मिळतो। फेर आयो द्वापर। पुराण कैवै कै इण जुग मांय धरम फगत दो पगां आय ढूक्यो। धरम रो मारग उबड़-खाबड़ हुयग्यो—ढेंऽटेऽऽणे। फेर आ धमक्यो कळजुग। धरम तो कळजुग मांय भी है, पण बापड़ो अेकै टांग ऊभ्यो है। आगै-लारै लैरक्यां खावतौ। डगमग-डगमग हुवतौ। आपां तो सगळा ई कळजुग रा जाया-जलम्या हां। तो बात करां कळजुग री। कळजुग मांय साम दाम दंड अर भेद रो राज है। वेद पुराण आ तो कैयी कै कळजुग आसी, पण कळजुग रा ई कित्ता काळखंड है, आ नीं बताई। ईं कारण ठाह ई नीं पड़ रैयो है कै औ कळजुग रो किसो पानो सिरकै है। ईं मांय घणो माथो मारण री जरूरत नीं है। डोळ देख'र कैयो जाय सकै कै अबार कळजुग रै मांयनै 'फेक जुग' चाल रैयो है। 'फेक' रो मतळब फेंकण आळो 'फेक' नीं है। हालांकै फेंकण आळा भी ईं जुग में ईज जलम्योड़ा है। तो भाया औ किसो फेक?

'फेक' फिरंगी भासा रो सबद। मायड़ भासा मांय कैवां तो—कूड़ो। सफा कूड़ो। अबै औ कूड़ो बीं अकूड़ी आळै कूड़ै

ठिकाणो :
बावरा निवास, समीप सूरसागर, धोबीधोरा, बीकानेर 334001
मो. 7014073564

 ISSN : 2320-0995

कचरै आळो नीं है। ईं रो मतळब है—झूठो। कळजुग रो औ बगत पैली इत्तो अेक्टिव नीं हो जित्तो अबार हुयो है। औसत माथै आळां नै तो आ ठाह ई नीं पड़ी कै औ 'फेक' जुग कद आयो। कद छायो। पण अबार ईं 'फेक जुग' रा ईज जलवा है। जिकै कानी आंगळी करो वो कठै न कठैई तो 'फेक' इज निकळै।

ईं जुग में कांई साचो अर कांई 'फेक', कीं ठाह नीं पड़ै। सोळै टक्का तो नीं, पण कम भी नीं। नेता 'फेक'। नेतावां नै चणै री झाड़की पर चढाण आळा 'फेक'। वांरा भासण 'फेक'। कंपनियां री बैलेंस शीट 'फेक'। मोटा-मोटा विज्ञापन 'फेक'। चैनल 'फेक'। अखबारां री सर्कुलेशन—'फेक'। पोथ्यां री खरीद 'फेक'। और तो और, हाथापायां भी 'फेक'। मार-कुटाई भी 'फेक'। परीक्षा मांय बैठण आळा छोरा 'फेक'। पासपोर्ट 'फेक'। आधार कार्ड 'फेक'। राशनकार्ड 'फेक'। बैंक अकाउंट 'फेक'। फेसबुक आई डी 'फेक'। ईमेल 'फेक'। ईमेल वाळी फीमेल 'फेक'। लेखक 'फेक'। अवार्ड 'फेक'। स्कूल 'फेक'। कॉलेज 'फेक'। हवा में त्यार हुई बिना बिल्डिंग री यूनिवर्सीटियां 'फेक'। संस्थावां 'फेक'। आयोजन 'फेक'। और तो और—लूण-मिरची-हळदी-धाणा सूं लेय'र दूध अर घी भी 'फेक'।

सै सूं बेसी 'फेक' है—राज रा आंकड़ा। विपक्ष रा आंकड़ा भी 'फेक'। 'फेक' जुग रो इत्तो जबरो असर हुयो है कै हर मिनख डाउटफुल हुयग्यो है। धणी लुगाई नै अर लुगाई धणी नैं संकै सूं घूरण लागग्या है। सगळां नैं साम्हीं आळै रै करम-धरम रै 'फेक' हुवण रो डाउट है। इण 'फेक' जुग रो इत्तो असर हुयग्यौ है कै मिनख खुद आपनैं ई 'फेक' समझण लागग्यो है। अब म्हनै ई लेयलो। इण लेख नैं लिखतां-लिखतां म्हनै खुद पर ई डाउट हुय रैयो है कै कठैई म्हैं भी तो 'फेक' नीं हूं। जद म्हैं फेक तो थे कांई? घणो सोच'र माथै नै दुख मत देवो, क्यूं कै अबै सै-कीं 'फेक' है।

◆◆

सत्यदीप

मुखिया मुख सो हो लिए

औ आपणो देस, इण मांय अेक सूं अेक लूंठा ग्यानी-ध्यानी महापुरुस हुया। देखो जठै सांवठी फौज है ग्यानियां री। टीवी माथै ग्यान रा बाहळा बगै। ग्यान इत्तो ढुळै कै सोरया ई को सुरै नीं। देखां जठै ग्यानी, कठै साच्याणी कठै बांच्याणी। ग्यानां रा बाग भखावटै री गायां री गौहर री गळाई झांझरकै टुरणा सरू हुवै तो आधी रात तांई मायां, बायां अर भाया लटूम्या रैवै डबियै रै साम्हीं। अब सुणणिया सुणै, गुणै अर भोड सुजावै सांकळा खाय परा जाणै छियां आई हुवै गोगोजी महाराज री। आ बात साव साची सवाई कै जनता आं ग्यानां री बिडराई धरम री धजावां धारै। गुरुवां री बात सिर माथै भलांई फूटै सिर पण गुरुवां री आण रै बट्टो नीं लागणो चाईजै। अठै जिकी बात गुरु लोगां फरमा दी, उणरै बट्टो लागज्या मा मोरी है। बांरी बात होठां चढी ना चढी कोठां तांई पूगतां जेज ही को लगावै नीं। अेक गुरूजी पे'को सो न्हाक्यो हो कै गणेशजी महाराज दूध पीवै है, आ खबर सूखै खोड़ में लाग्यै बासती बरगी आ पसरी रै भाई रामा ही भजो! आखो देश सूंडाळै नै दूध पाणै सारू इयां उंतावळो बावळो हुयो कै जे बो नहीं पायो तो परळै हुय जासी। बापड़ा गणेशजी रै गुचळक्या हो ली, बिसडकारां सूं गळो खटास देवै, पण भगतां री भीड़ बांनै अणभांवतो ही टिकायो जियां साव चोर नेतो भासण में जनता नै ईमानदारी रो घूंटियो पावै। हालत आ हुयगी ही कै टाबरां रो ताळवो दूध बिना सूकै हो पण मांटा मिनख लुगाई बीस रो पाणी बरगो दूध सितर में दे दनादन गणेशजी रै भोडै माथै। बीं दिन आखो जगत मानग्यो हो

ठिकाणो :
अपनत्व, वार्ड 24,
आड़सर बास,
श्रीडूंगरगढ़ (राज)
मो. 9460905951

 ISSN : 2320-0995

भारत री अनेकता में अेकता री राग। अेक छोटी-सी बात आखै गांव-गळ्यां रै नाळां में बेवा दिया दूध रा बाहळा। छींकता-धांसता गणेशजी, भगतां री भगती सूं आंती आयोड़ा दिया तैतीसा हिमाळै रै कैलास भाखर माथै मां बापू कनै भारत का रोजणा रोवणै सारू। भाटा भीजै हा दूधाधार।

बातड़ी कैवै तो बाबा आछी, पण बीं री परोट कियां लेसी आगलो, आ जाणता तो बाबा बुधी लगावता कोनी के? अब लेवो बाबो तुळसी कैयी तो सावळ नै ही कै 'मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक'। बांनै औ ठाह थोड़ी हो कै भारत अेक दिन गणतंत्र हुवैला जठै। गण री खाल कूटणियां तंत्र रा फागड़दू मुखिया बण इण दोहै री माळा बणाय कंठां टांग, जकी बाबो स्यात नीं चावै हो, बा कर'र आखै देस री भींभरी बांध देवैला। गोरा भी मांटा बडा हरामी निसरया। आधी रात रा आजादी री फड़दी फाड़ सूंपी तो गीड मसळणियां आज तांई भगावटै री सूरज उगाळी ताकै। अधरातिया प्रेत आजादी री पांती आई पोटळी ले ब्हीर हुया। अब जनता जागी जित्तै तो बण बैठ्या मुखिया। मुखियो जी आगै जागी जनता करै लागी डंडोत, जियां पेल्या करती ही। अब डंडोतिया भगतां री भीड़ सूं फोगलै सूं घिंट्याळ हुया मुखिया, मुंहडो हो लिया। बाबै रो कथ्यो दोहो मुखिया जी रो राछ बणग्यो। बाबै रो तो के बिगड़ै, बो दोहो आजै तांई सेधै, सागै कोढ में खाज कै शत जोजन तेही आनन कीन्हा। जीमणै री झट झाल मुखिया जी रो मुंहडो जीमणो जको पोळायो कै रामा भजो भाई!

म्हैं चकरीघम हुयो इयां कै सालेक पैली म्है गांवतरै जावणै सारू बस-अड्डै खड़्यो हो कै हांफरड़ै चढ्यो हुकमो आयो। हुकमो सारलै गांव रो हो, सैंध-पिछाण ही माड़ी मठी। आवतां ई रामा-स्यामा ही को करी नीं अर सीधो ई बोल्यो, ''दादा! सौ खंड रिपिया अबार ई देवो, काठी पजी पड़ी है। गांवड़ै जावणो है अर पगरखी फाटगी। टांको दिरास्यूं कनै भाड़ियै री ही जुगत कोनी। गांव भी जास्यूं। साच बाबै री सौगन, पांचवैं दिन पाछा फोर देस्यूं।''

ल्यो बळो, लांपो लागै कठै अणफसी आ लागी गळै! दिया काढ'र सौ रिपड़ा, जी तो जाणै हो अै डूबग्या, पण मन रो कैयो हुयो, भोडै रो नीं। दो साल पछै अेकरसी बजार में ऊभो हो तो चाणचक ही चिलकती-सी इसकारपियो चरड़ देणी कमर रै चिपती-सी रैयी। म्हैं डाफाचूक उछळ'र कीं बोलू बीं सूं पैली ही हुकमसा धोळै झक कुड़तै पजामै में मूंडै में पान रो बीड़ो दाब्यां हेटै आया अर बांथ भरली। म्हैं कीं पूछूं बीं सूं पैली बोल्यो, ''दादा, बो सौ रिपियां रो थांरलो नोट दिन सुधार दिया।''

''पण बैरी हुयो के?''

बो बोल्यो, ''दादा दिन फुरग्या अर जाणै लोटरी ही लागगी। दादा थे दिया बिंदास, गांव तो को गयो नीं, बस जूती गंठाय नेताजी री हेली पूग लियो हो, बठै नेताजी

री म्हैर हुई अर राज री रीजाब सरपंच री सीट पर चुनाव लड़ा दियो, सूंवा भाग सूंवा दिन, साम्हीं कोई हो ई कोनी तो सीधो सरपंच माथै नेताजी रो हाथ तो कोई चूं ही को करै नीं। पांच बरस तो आपणा अर आपणै बाप-दादां रा। बिकास ही बिकास है म्हारै अर म्हारी पंचायत रै। कालै ही गाडी कढाई ही, आज स्हैर आयो तो थे टकरग्या।''

म्हैं बोल्यो, ''के भोड टकरग्या, म्हारो तो काळजो गिरै छोड दी मरज्याणा।''

म्हैं और कीं बोलूं गप देसी गाडी में बैठ लिया अर तेतीसा मनाया आ कैवतो कै नेताजी री हेली बेगो पूगणो है। गांव रो मूंडो हुकमो चरै जणै पूरो फाड़ मुहडो, बाबै रै दूहै री लीकटी पर चालतो—'मुखिया मुंह सो, चाहिए खान पान को एक।' तो साव अेकलो खावै, पचावै। जे नीं पचै तो भी खावै अर बिसडकार री बांस लुकावणै सारू पान रा बीड़ा मूंडै में दबावै।

अब बियां ई स्हैर अेक दानै नै स्हैर रै बिकास री हूं उपड़ी जिकी उपड़ी कै मुन्सपलटी चुणावां में टिकट ल्याय मेंबर बण्यो अर नाथी बाड़ै में रोड़ सगळा नैं अर बणग्यो चेयरमैन। अब अला थारी कै म्हारी! बिकास रो गैड़ इसो घाल्यो कै साल दोयेक में चार पट्टां में चोखंडी हेली अर बंटी भूर में आयला-भायला अर राज रा नौकर भी गलरका करै। बियां ई आखै देस-परदेस रख पूगता सगळा जाग्योड़ा मुखिया बै मूंडो फाड़ तुलसी बाबै री बात साकार मूंडा इयां पसार लिया जाणै सुरसा रो सत जोजन मूंडो। ऊरो चायै जित्तो, धापणै रो नांव ई नीं लेवै। जठै लाधै बठै चरणो सरू। पोठा ई को करै नीं म्हारा मांटा।

फाटी ब्याऊ आळा, सैफर पूंछणिया रै डील रुंआळी आयगी। झगर-मगर गाड्यां में भूंवै। मटरका करै, म्हा बरगा बियां ई अक्कल नै अंगूठै में दाब्यां खल्ला घिसता फिरै ग्यान री गांठड़ी चक्यां।

◆◆

सादर सरधांजळी

राजस्थानी रा वरिष्ठ साहित्यकार मोहनजी आलोक, श्यामजी गोइन्का, लोककला रा मर्मज्ञ विद्वान डॉ. श्रीलालजी मोहता, शिक्षाविद् सी.एम. कटारिया, सूचना अर जनसंपर्क महकमै सूं सेवानिवृत्त फरीद खां साब अर कॉमरेड रेंवतजी नैण रो लारलै दिनां निधन हुयग्यो। समाज अर साहित्य जगत सारू आ अपूरणीय क्षति है। ईश्वर वांरी आत्मावां नैं आपरै शरण में ठौड़ देवै अर परिवार जनां नैं इण दुख सूं उबरण री सगती बख्सै। 'राजस्थली परिवार' कानी सूं सादर सरधांजळी।

ISSN : 2320-0995

प्रेम जनमेजय

उल्थो : कृष्णकुमार 'आशु'

गुरु चरणां मांय तीजो

बालपणै में माऊ रै साथै त्रिगुणस्वामी री आरती गावता। मोट्यारपणै मांय कबीर बतायो कै माया त्रिगुण रो जाळ लियां डोलै। तीन री महिमा रो पार नीं पायो जा सकै। तिहूं रो बखाण तो वेद-पुराण तकात करै। त्रिदेव है, त्रिलोक है अर त्रिगुण है। अेक त्रिकोण च्यारूं कानी बापरयोड़ो है। पण ईं कोण रा सगळा कोण अेक जिस्या कोनी। त्रिदेव में सिव देवां रा देव महादेव है अर सगळै पासै पूज्या जावै। पाळणहार विस्णु है, जिका अवतार लेवै। ब्रह्मा है पर उत्ता कोनी पूज्या जावै। ईं सारू पुष्कर मांय ई बिराजै। सतव, रजस अर तमस मांय सतव री महिमा रो पार कोनी अर तमस दुतकारयोड़ो है। तीनूं लोकां रै ब्रह्मांड मांय आभै माथै देवता बिराजै, पूज्या जावै। धरती माथै चौरासी लाख जूण प्रभू री लीला रो आणंद लेवै। पण पताळ मांय कांई है, कीं बेरो कोनी। पताळ अणदेख्यो करयोड़ो है। धरती माथै नर-नारी अर तीजो जीव है। प्रभू री निजर मांय हरेक जीव बरोबर है। पण नर जीव बेस्ट मरद है। पतिवरता नारी चरणां री दासी है अर तीजो कीं ई कोनी। बो लगोलग बेइज्जत हुवै। जदकै बीं रै महताऊ हुवणै रो बेरो लागतो रैवै। महाभारत मांय बीं रै महताऊ हुवणै रो बेरो तद लागै, जद भीष्म बीं री वजै सूं ई मारया जावै।

जद बीजै छेहड़ै राख्योड़ा री कथा कैयी जावै तो आं छेहड़ै राख्योड़ां री क्यूं नीं कैयी जावै। अेक बां री कथा सुणो :

अेक बै हा। बै गुरु चरणां मांय बैठया। बै घणा नरम लागै। हरेक बगत सीखणै री औस्था मांय ई निजर आवै। बांनै कबीर

ठिकाणो :
वार्ड नंबर 10
बाला जी री बगीची
पुरानी आबादी,
श्रीगंगानगर 335001
मो. 94146-58290

घणा दाय आवै। क्यूंकै कबीर ई बांनै बतायो कै गुरु अर गोविंद मांय गुरु बेस्ट है अर सदीव बीं रै ई पगां लागणो चाईजै। ईं नै बां किलास छै मांय बांच्यो पण राजनीती री काजळै री कोठड़ी मांय जावती बगत जीवण मांय अपणायो। सीखणै री औस्था मांय बांरी निजरां गुरु रै पगां कानी लागी रैवै अर कान गुरु रै कान कानी। बै गुरु रै चरणां मांय बित्तो ई झुकै जित्तै सूं पीठ सजदे मांय झुक'र दोगुणी नीं हो जावै। बै भलां ई कित्तो ई झुकै पण बांरी निजरां घणी दूर तांई उठेड़ी हुवै। जियां चुणाव रै बगत कोई समझदार नेता वोटरां रै चरणां मांय झुक्योड़ो हुवै, पण बीं री निजर कोनी झुकै, दूर संसद मांय पड़ी कुरसी तांई उठ्योड़ी हुवै। बांरा हाथ ई चरणां तांई उत्ता ई पूगै, जित्ता गुरु री किरपा बां तांई पूगै। घणो कीं मिल जावै तो चरणां मांय धोक मार लेवै नीं तो गोडां सूं हेठां कोनी उतरै। बांरै हाथां री हळचळ कानी गुरु रो ई खास ध्यान रैवै। चेलै रो हाथ गुरु नैं खास ग्यान देवणै री तागत राखै। चेलै रै हाथ सूं गुरु नैं ग्यान मिलै कै बांरो चेलो बांरै कित्तै नैड़ै है। चेलै रै हाथां री थिती सूं ई गुरु नैं ग्यान मिलै कै चेलो कित्तो राजी है। अै हाथ ई गुरु री खुसी रै सूचकांक नै दरसावै। जे सारवजनिक रूप सूं हाथ गुरु रा चरण धोक देवै तो खुसी रो सूचकांक सेयर बजार मांय आई तेजी-सो बुलिस हो जावै। इस्सै बगत मांय गुरु निवेसक नैं गळै लगावै अर आपरी खुसी बीं माथै उंडेळ देवै। आगलै दिन रै अखबारां मांय गुरु किरपा री घोसणा हो जावै।

बै जाणै कै गुरु रै ग्यान रै बगैर इण असार संसार रो सार कोनी पायो जा सकै। गुरु ई तो बतावै कै किस्यो संत बणनो है अर किणनै थोथो समझ उडावणो है। संसार कित्तो मोटो है अर इणरै सार रो ग्यान गुरु नैं ई हुवै। गुरु ई जाणै इण असार संसार मांय सार कठै-कठै ल्हुक्योड़ो है। किण सिकरी रै अठै पहियो घिस्सणै सूं सार मिलै।

पण अबै औ कबीर रो बगत कोनी। कबीर रै बगत मांय मोबाइल, फेसबुक, वाट्सऐप, राष्ट्रीय अर अंतरराष्ट्रीय माथै अर केंद्रीय अर राज स्तर माथै सीकरियां कोनी हुया करती। अेक ई गुरु घणो हुंवतो ग्यान सारू। आज तो च्यारूं कानी सार तत्त्व री खानां खुद्योड़ी है। आजकालै साधारण गुरु सूं काम कोनी चालै। आज रै बगत मांय सार ग्रहण करणै सारू सिद्ध गुरु री जरूरत हुवै। कबीर रो काम फगत अेक निरगुण ईस्वर सूं चालग्यो पण आजकालै गुणी रै बगैर कठै काम चालै! आजकालै जद सिद्ध गोविंद री जरूरत है तो गुरु री क्यूं कोनी? गोविंद ई तो घणै रूपां मांय बिराजमान है। भगतां री बधती संख्या नैं देखतां थकां गोविंद ई बगत अर सिद्धि हासल कर लीन्ही है। कठै ई बो संकटमोचक है तो कठै ई मंगळमूरती। कठै ई बो भोळोभंडारी है तो कठै ई हारै नै हरिराम। कोई गोविंद सोम नै राजी हुवै तो कोई मंगळ नै। कोई बुध नै राजी हुवै तो कोई थावर नै। गोविंद अेक ई है, पण अलेखूं है। इयां ई आजकालै गुरु ई अेक है, पण अलेखूं है।

 ISSN : 2320-0995

इण असार संसार रो सार ग्रहण करण नै बां घणकरा गुरु धारण कर राख्या है। गुरु ई तो घणै रूपां मांय मिलै। अर जद महाभारत रै द्वापर जुग सूं द्रोणाचार्य जिसा गुरु चेलां रै साथै घणकरा खेल खेलता रैया हुवै तो कळजुग रा गुरु क्यूं नीं खेलै? अर अब तो खेलणै वाळा नवाब ई बण रैया है! खेल अेकपासै रा ई कोनी रैया। गुरु अर चेला आपस मांय खेलता रैवै। गुरु गुड़ हो जावै अर चेलो खांड हो जावै तो गुरु बिलड़ी हो जावै। इण सारू चेलो घणकरा गुरु धारै अर गुरु ई अलेखूं चेला पाळै। कोई चेलो अकादमी मांय बैठ्यो है तो कोई संसद मांय, कोई कोरट मांय तो कोई...।

तो बां घणकरा गुरु धारण कर्‌योड़ा है। गुरु रै चरणां मांय बैठ्या बै नरम हुवै। पण जद चरण फळ कोनी देवै तो बै दुरवासा हो जावै। इस्यै मांय बांरी आंख्यां राती हो जावै। इस्यै बगत मांय बांरा गुरु ई बां सूं थर-थर कांपै।

पण मितरो! म्हैं अठै घणा गुरुवां अर घणा चेलां वाळी कथा कोनी कैवूं। म्हैं तो मामूली-सो व्यंग्य लेखक हूं, जिको कथा रो महाभारत कोनी रचै, बल्कै सतसैया रा दूहा कैवै। म्हैं तो साहित्य रै कूवै रो मेंढक हूं, जिको कूवै नैं ई आपरो संसार मानै। म्हैं तो कूवै मांय ई उछळकूद कर सकूं। म्हैं तो बीं दुखियारै री कथा कैवूं जिको राजनीती, ब्यौपार आद मांय फेल होयां पछै मजबूरी मांय साहित्य मांय आयो हुवै। जियां किणी महताऊ विषै मांय दाखिलो नीं मिलणै सूं कॉलेज मांय दाखिलै री इंच्छ्या राखणै वाळो हिंदी ऑनर्स का संस्कृत ऑनर्स मांय आवै। म्हैं तो समाज रै आगीनै मसाल लेय'र चालणै वाळै बीं बावळै होय चुकै मिनख री कथा कैवूं जिको आपरै लेखण री पाण सगळी दुनिया नैं बदळणै री तागत रो भरम पाळै, पण आपरै बगत नैं कोनी बदळ पावै। म्हैं बीं लेखक री कथा कैवूं जिणनै जगत जमारै मांय बिराज्योड़ा सगळा पदारथां मांय सूं कोई पदारथ कोनी मिल्यो। इण बावळै लेखक गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु अर गुरु गोविंद दोनूं ऊभा मंतरां रो जाप कर्‌यो अर गुरु चरणां मांय लमलेट हुवण नै पूग्यो। बावळै गुरु चरणां मांय बांनै रुचणै वाळो पीवण जोग पदारथ मेल्यो, कीं सुकुमारी लेखिकावां रो चितराम मेल्या अर बांरै चरणां मांय लमलेट हुंवतो थको बोल्यो, ''गुरु, आं दिनां म्हैं बावळो होय रैयो हूं।''

गुरु रा बोल, ''थूं तो मोटा-मोटा नैं बावळो करणै री तागत राखै अर थूं तो राजनीती रै घाट-घाट रो पाणी पीयो है। थूं कियां बावळो होय रैयो है?''

''सरकार बदळगी है। लारली सरकार रो ठप्पो डील रै हरेक हिस्सै मांय किणी टेटू री भांत छप्येड़ो है। सत्ता रै गळियारां मांय गेड़ा मारतां-मारतां गळी रो गंडक होयग्यो। केई चरण थाम्या, कादै सूं भर्‌योड़ा चरण ई कंवळ मान'र छाती सूं लगाया। आजकालै तो राजस्थान जिस्यै रेगिस्तान मांय ई बाढ आयरी है। पण आपणै अठै तो घणघोर कांग्रेसी काळ पड़्यो है। सोचूं साहित्य मांय किस्मत आजमाय लेवूं। आप तो साहित्य-उद्योग रा गुरु हो। आप ई तो ब्रह्मा री भांत जीव नैं साहित्य जगत मांय जलम देवणै वाळा हो।

विस्णु री भांत पाळण करणै वाळा हो, सिव री भांत दुसमीं रो संघार करण वाळा हो। त्रिदेव हो। त्राहिमाम...त्राहिमाम।''

गुरु मुळक्या अर बोल्या, ''तैरै हरामीपणै मांय कोई कमी कोनी आई। पण तैरै जिस्यो काजळ री कोठड़ी वाळै अणूतै अनुभव वाळो चेलो मिलणो गुरु सारू गुमेज री बात है। बोल, साहित्य मांय कियां बावड़णो चावै?''

''डंकै री चोट माथै आवणो चावूं। कोई बडो पुरस्कार दिरावो, जिणसूं विवाद हुवै। पुरस्कार बगैर लेखक बीं बूडळी री भांत हुवै, जिण नैं भरतार कोनी मिल्यो अर जिण नैं देख'र रेलगाडी ई सीटी कोनी बजावै। बापड़ी रांड जिस्यी आंख्यां सूं कुंवारां नैं जोवै अर कुंवारा बीं नैं पारटी मांय बेकार होय'र स्टोर रूम मांय निरास बैठ्या डैण नैं बगैर देख्यां निकळणै वाळी भांत ई देख्या करै। गुरुदेव म्हारै मांय गिरगिराट माच री है। साहित्य री राजनीती रो ग्यान देय'र म्हारो कल्याण करो। इस्यो ग्यान कै साहित्य री काजळी कोठड़ी मांय किलोळ करूं पण बगुलै री भांत धोळो दीस्सूं।''

''साहित्य मांय तीजै रो प्रयोग करो।''

''साहित्य मांय तीजो? ओ कांई हुवै?''

''थूं क्रिकेट जाणै?''

''गुरुजी, राजनीत बापां री किरपां सूं क्रिकेट री घणकरी कमेटियां मांय रैयो हूं, पण क्रिकेट रै कीं खिलाड़ियां रै नांव रै इलावा कीं कोनी जाणूं। माफ करो। बतांवता सरम आवै।''

''सरम ना कर। थूं इस्सो अेकलो कोनी। हर खेतर मांय तैरै जिस्या प्रतिभासाली घणी कमेटियां री सोभा बधावै। क्रिकेट मांय स्पिनर अेक गेंद घालै, 'दूजो'... बीं रै बारै में कीं जाणै।''

''स्यात गुरुजी, इण रो मतळब औ है कै पैलां लाल गेंद घाली जाती ही, अबै धोळी गेंद घाली जावै।''

गुरुजी मुळक्या, ''नीं टाबर! आ भरम मांय घालणै वाळी गेंद हुवै, बल्लेबाज सोचै कै गेंद लेग मांय जायसी, पण जावै कठै और ई है।''

''गुरुजी, राजनीती मांय म्हैं इस्सी घणकरी गेंदां देखी है। म्हैं ई इस्सी गेंदां घाली है। किणी नैं बेरो ई कोनी चालतो कै म्हैं कामरेड हूं का भगवाधारी। इण भरम री वजै सूं म्हैं दोनूं पासै रा सुख घणा उठाया है। आखी उमर म्हैं भी तो आईज गेंद घालतो रैयो हूं। लोग सोचता म्हैं इन्नै आफंगा माथै चाल्यो, पण जावतो कठै और ई हो। पण गुरुजी अबै लोग इण 'दूजै' नैं समझण लाग्या है। राजनीती मांय लोग अबै पुराणै बगत रा भैयाजी कोनी, अंगूठा टेक ई कोनी, बै सतरंज रा तगड़ा खिलाड़ी है।''

''जाणै, अेक और गेंद हुवै, 'तीजी'!''

''बा कियां हुया करै गुरुजी ?''

''आ जळेबी री भांत हुवै। इण रो कोई ओर-छोर कोनी हुवै।''

''तो कांई म्हैं 'तीजो' नांव री गेंद बणूं अर साहित्य रै जगत जमारै मांय दाखिल होवूं ?''

''नीं, साहित्य मांय क्रिकेट रा गुर कोनी चालै। थूं तीजो बणी मती, तीजै रो प्रयोग कर। जियां अरजुन भीष्म रै संघार सारू कर्‌यो। भीष्म जिस्सो महारथी इणी तीजै रै प्रयोग सूं ई जमीन माथै गिर्‌यो। इण तीजै नैं बणावणियो भगवान श्री क्रिसण है। भगवान श्री क्रिसण ई अरजुन नैं समझायो कै जुद्ध मांय कोई बडो भाई, छोटो भाई, काको, मामो, भाई-भतीजो कोनी हुवै। जिको हुवै, बो टारगेट हुवै। टारगेट पावणै सारू जे किणी तीजै रो मोढो उपयोग करणो पड़ै तो नचीता होय'र करो, औ ईज धरम है। हिंदी साहित्य मांय घणा सिखंडी है। बांरो सद्‌उपयोग करो। नूंवा-नूंवा चेला पाळो। बां रै मोढै माथै हाथ धरो तो बांरो मोढो थारो होय जायसी। साहित्य मांय दूजां रै चंदण सूं आपरै डील नैं रगड़'र चंदण रो सुख पावणै री कामना करणै वाळा घणकरा सिखंडी है। बांनै आपरै बरदहस्त रो चंदण देवो अर भीस्म नैं निपटावो। जद भीष्म जमीन माथै पड़ै तो बांरै कनै जाय'र तातड़ै रा आंसू बहावो। बांनै हमदरदी रो जळ पियावो। महानता रो सिरहाणो देवो। मरतै मिनख नैं तातड़ै रा आंसू ई असली लागै। बो थनैं बरदान मांय कीं ई देय सकै।''

''गुरु जी, औ तीजो कांई फगत भीस्म नैं निपटावणै सारू ई काम आवै ?''

''नीं बच्चा। साहित्य मांय तीजै रा उपयोग घणा ई है। तीजो आपरी स्यान नैं बणावणै सारू आपरी टैची उठावै। आपरी गाडी रो दरुजो खोलै, जिण सूं आयोजक आपरो जबरी सुवागत करै। औ तीजौ ई है, जिको आपरै समरथन सारू बायरो त्यार करै। अेकर इण रो प्रयोग कर'र देख तो सरी, थनैं ठाह लाग जासी कै औ कित्तो महताऊ है। जाणै ई है कै चालाक लोगां राजनीती मांय किण भांत छेहड़ै राख्यां लोगां रो उपयोग कर्‌यो है। साहित्य मांय ई इस्सा प्रयोग हो रैया है। अबै थूं लमलेट होयनै म्हांनै प्रणाम कर अर हथियार रै साथै साहित्य समद मांय कूद जा। तिरणो आपै ई आ जावैलो।''

गुरु सूं सुवारथ पूरो हुवण पछै ई बै गुरु रै चरणां मांय लमलेट होयग्या। बै जाणै कै अबै तो बै साहित्य समद मांय कूदण लाग रैया है, नवसिखिया है अर नीं जाणै कद गुरु री जरूरत पड़ जावै। गुरु बोल्यो, ''जादा ना झुक। तेरी रीढ री हाडी कमजोर है। बस इत्तो याद राखीं कै जद गुरु नैं तेरी जरूरत पड़ज्यै तो बीं री पुकार सुण लेईजै!''

◆◆

डॉ. रमेश 'मयंक'

जीयाजूण री ओळखाण करावती 'प्रेम री पोटळी'

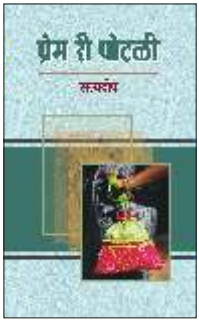

'प्रेम री पोटळी' सत्यदीप री ग्यारह कहाणियां रो संग्रै। कवि दीठ मुजब जिसा दिख्या, बिसा लिख्या। अै कहाणियां साच्याणी कहाणियां भी है, जीयाजूण सूं जुड़्योड़ी। 'प्रेम री पोटळी' कहाणी पढतां रूं-रूं मुळकै। कंवळै रेसम-सै केसां में आंगळ्यां कंवळै तरीकै सूं फेरती मानसिकता रो उठाव। खुशबू टकराणी, आंख नीची कर'र धींरै-सी मधरी मुळक, चितार रा चितराम मन री आंख्यां में जींवता करणै री आफळ, दोन्यूं अेकै साथै निजर टकराता, सरम सूं मुळक'र नाड़ नीची करता टंटोळीजगी है—प्रेम री पोटळी। आ कहाणी सोनलभींग-सी चिलक लियोड़ी, प्रेम आखर मन रै मांय लिखती, मीठै मतीरै सरीखी। अनाम प्रेम सूं बत्तो और कोई प्रेम कियां हुय सकै।

'रतगड़िया'—कुशल-कांता री बातां। कुशल रा पिताजी शराबखोरी सूं घर डुबोवै। करजा री चिंता कांता नै। घर बेच'र टंटो निपटावै अर किरायै रो घर लियां आगली सुध पड़ै। लड़ाई-झगड़ा रो तोड़ उतावळ सूं नीं, धीरप सूं निकळै। बात रो तोड़ कठै है, आ आपां नै सांभणी है। जीभ री लपालप में तो सुळझती कोनी। औ निचोड़ अनुभव री दीठ है। रतगड़ियो फोड़ राध काढ दी है—प्रतीकात्मक है। 'श्योनाण' कहाणी मांय ठेकेदार री अणूती अर कोजी बेहूदी करतूतां री बिगत है। सिसकारो छोडणो पड़सी। 'हथाईघर' हवेलियां री ऊंची बातां री कहाणी है। मंगतराय जी रो पांच मंजलो कॉम्पलेक्स 'हथाईघर' री बिगत रो मंडाण है। परिवार री परोपरी मुजब बेटै रा कान सेठां री हेली—सेठाणीजी बिंधवाता आया है। अेक खूणै में गैलसफो-सो ऊभो मंगतियो।

ठिकाणो :
बी-8, मीरा नगर
चित्तौड़गढ़
(राजस्थान) 312001
मो. 7023664777

 ISSN : 2320-0995

नांव धनपत हो तो सेठां री हवेलियां में ओपै, खवास जी रा घरां में मंगतियो चोखो, जिणसूं पड़्यो नूंवो नांव मंगतराय।

—सोनीजी आपरा राछ संभाळ त्यार हा।

—आ बेटा कान बिंधवा-सी लाडकंवर।

—देख लाडूड़ा—अै दोन्यूं ई बिंधासी।

—आ रे छोरा, कान बिंधा लै। सेठाणी म्हारै कानी आंगळी करी।

—दादीजी हाथ पकड़'र आगै कर कैयो—करड़ो रैयी, रोई मत।

—सेठाणी आपरै हाथ सूं पतळी सोनै री तांत म्हारै कान रै चिपायी। पछै सोनीजी सपड़कै जोर देय म्हारै कान में बा तांत घुसेड़ दी। पीड़ घणी हुई, म्हैं चुपचाप कान में तांत घला ली।

आ कहाणी हवेलियां री हथाई जैड़ा चितराम लखावै।

'शर्माजी' इतिहास रा मास्टर, ट्यूशन में पढावै भूगोल। साहित्य, संगीत, धरम री बातां में दखल राखै। ग्यान री गांठड़ी खोलै'र तावो सो ज्यातो मांगतोड़ो सांढ चरावो नै चरितार्थ करै। 'खेबी' मांय बीकानेर री हवेलियां। सेठ परदेस कमावै। बाखळ, बाणिया-बामण बस्ती रो मंडाण। हवेली रो अेक मंडाण :

—ठहर मरीलिया। म्हारी चौकी नास कर दी। कचरो रोज अठै खिंडा'र के बडेरां रो नांव काढै है रे खेबीगारा।

—के बडेरां तांई पूगगी, थारा बडेरां रै के लांपो लागग्यो? इसी कोडीधज है तो थारी चौकी उपाड़'र थारै औरै में धरलै। गळी तो जित्ती थारी, बित्ती ई म्हारी।

—देख बीनणी, थारै टींगर रा लखण थोड़ा ठीक को है नीं। म्हारो माजनो मार दियो है। पूरै बास में म्हारी मरजादा है। म्हैं सेठां नैं बतावूं, पण थे रैयग्या बामण जात। हेली री साख आखै चोखळै गूंजै, काल रो टींगर इण माथै धूड़ फेर दी। बेटा बीनणी टींगर नै कीं तो हीर हटक में राख!

आ कहाणी सिखावै—ऊत रो घर जूत हुवै।

'ठंडो कमरो' कहाणी विदेसी सभ्यता, संस्कारां री पुड़त उघाड़ती कहाणी है। विदेसी कल्चर सूं रंग्योड़ो टाबर कैवै—''थे जाम्यो हो, आ बात, औ कोई हक कोनी देवै कै म्हैं थांरो गुलाम हूं। ममा, माइंड इट, आइ ऐम ओनली ऑनर ऑफ माई लाइफ, एंड डोंट डिस्टर्ब अस।''

अेक और बानगी :

—डी.जे. पर जोर-जोर रै हाकै...। बोतल खोल, गिलास में गोळियां मिला'र पीवै। सगळा नाचै। नसो बां पर कुंडळी मारै। राफड़ लीला बधापो लेवै। अेक जणो म्हारी कमर में हाथ घाल'र म्हनै आपरै चिपाणी चायी। छोरी अमित रै बाथ घाल'र नाचती कम, चिपकै ज्यादा ही।

—औ फीटापणो ना तो म्हैं म्हारै घरां देख्यो, ना ई अठै बरदास्त करूं।

आ कहाणी विदेसी संस्कारां नैं नकारती दीठ री कहाणी है।

'इकटंगियै री वारता' कहाणी मांय राजस्थानी कथा-साहित्य री जूनी बानगी 'वारता' री छिब रो उकेरणो सरावणजोग है। जामणै सूं जमणै तांई, बाज्या सोवन थाळ, अर दाता देवणहार शीर्षक सूं तीन वारता। पैली वारता बीतै जमानै री। नामी सेठ जसवंतराय। कपड़ै रो कारोबार। सगतसिंघ रियासत रा राजा। तीजा सेठां रा सगा कानदास मुरारका। कानदासजी कैवै, ''अन्नदाता थांरै राज रा नामी ेठ। कपड़ै री गांठां जावै अर कलदारां री बाळद आवै। हेलियां तो बाणिया मुरारका ई चिणावै।''

इण कहाणी मांय मसखरी, सगो सगै री जड़, राजे रजवाड़ै री आण जैड़ी बातां रो चोखो मंडाण है। कमेरा काम करै, लुगायां गीत गावै। सेठां री साख सवाई, पाग सवाई। मजेदार मोवणी कहाणी है।

'नचिकेता' कहाणी मांय नामी गिरामी सेठ-साहूकारां री नूंवी फैक्ट्रियां, कारखानां, हवेलियां, दान सारू बणायोड़ा बडा अस्पताळ आद रा उद्‌घाटण संत-महंत रा गादीधार रै हाथां करावणै, उणां री किरपा रो मंडाण वाळो कथानक है। 'पेक्टसा रो पोतो' मांय लॉकडाउन रो चितार है। किताबां पढणै रो काम—प्रेमचंद रा फाट्योड़ा जूता जैड़ी कहाणियां। सुपनै में परसाईजी रो आय'र घुरकावणो। सुरग-नरक रै बिचाळै डेढ कमरै रो बी.एच.के. रा टापरा रो अलोट होवणो, नुगरा रो धरम नागड़ो हुवै, मातादीन पेक्टसा नैं ढूंढणो, अल्ला-अल्ला खैर सल्ला, सेवा मुगती रो पानो, आखी उमर फदड़ पंचायत अर कवि सम्मेलनां में गाळ'र कैवै जरूरी काम है झांय-झांय में के सार, चिंगरियै ऊंठ अर चिरीज्यै ठूंठ रो जाबतो राखो, मातादीनजी रा पोता गऊसाळा संभाळै, ऊंधा-पाधरां सूं काळी दौलत भेळी कर'र पोमीजै, जैड़ी ओळ्यां कहाणी बिगसावै, जिणमें लेखक री पीड़ उकेरणी, कोरणी। 'अंतिम ब्राह्मण' राम-रावण रासो, विभीषण भेद खोलनै रामजी रै साम्हीं बात पुरस दी। आ गूढ बात री गांठ खोल'र साम्हीं धरण री कहाणी है।

इण भांत सत्यदीप री अै कहाणियां करड़ी दीठ, कंवळो मन, उकळती पीड़ सूं बाथेड़ा भरती, दो-दो हाथ करती जीयाजूण री ओळखाण करावती कहाणियां है।

सत्यदीप अेक ठावो-चावो नांव। किणी ओळखाण रो मोहताज कोनी। इणां री चतर कलम पाठकां सारू प्रेम री पोटळी रै माध्यम सूं जीयाजूण री सावळ-साफ अर साची ओळखाण कराई है। इण पोथी री महारत आ है कै अै कहाणियां मन पे छाप छोडै, मगज मांय सोचण-चिंतन करतां सावचेती सूं आगै बधण रो सनेसो भी देवै।

◆◆

पोथी : प्रेम री पोटळी / विधा : कहाणी / कथाकार : सत्यदीप / प्रकाशक : राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ / संस्करण : 2021 / पाना : 96/ मोल : 200 रुपिया।

 ISSN : 2320-0995